













Aug 21/9

6  
 7  
 8  
 9  
 10  
 11  
 12  
 13  
 14  
 15  
 16  
 17  
 18  
 19  
 20  
 21  
 22  
 23  
 24  
 25  
 26  
 27  
 28  
 29  
 30  
 31  
 32  
 33  
 34  
 35  
 36  
 37  
 38  
 39  
 40  
 41  
 42  
 43  
 44  
 45  
 46  
 47  
 48  
 49  
 50  
 51  
 52  
 53  
 54  
 55  
 56  
 57  
 58  
 59  
 60  
 61  
 62  
 63  
 64  
 65  
 66  
 67  
 68  
 69  
 70  
 71  
 72  
 73  
 74  
 75  
 76  
 77  
 78  
 79  
 80  
 81  
 82  
 83  
 84  
 85  
 86  
 87  
 88  
 89  
 90  
 91  
 92  
 93  
 94  
 95  
 96  
 97  
 98  
 99  
 100  
 101  
 102  
 103  
 104  
 105  
 106  
 107  
 108  
 109  
 110  
 111  
 112  
 113  
 114  
 115  
 116  
 117  
 118  
 119  
 120  
 121  
 122  
 123  
 124  
 125  
 126  
 127  
 128  
 129  
 130  
 131  
 132  
 133  
 134  
 135  
 136  
 137  
 138  
 139  
 140  
 141  
 142  
 143  
 144  
 145  
 146  
 147  
 148  
 149  
 150  
 151  
 152  
 153  
 154  
 155  
 156  
 157  
 158  
 159  
 160  
 161  
 162  
 163  
 164  
 165  
 166  
 167  
 168  
 169  
 170  
 171  
 172  
 173  
 174  
 175  
 176  
 177  
 178  
 179  
 180  
 181  
 182  
 183  
 184  
 185  
 186  
 187  
 188  
 189  
 190  
 191  
 192  
 193  
 194  
 195  
 196  
 197  
 198  
 199  
 200  
 201  
 202  
 203  
 204  
 205  
 206  
 207  
 208  
 209  
 210  
 211  
 212  
 213  
 214  
 215  
 216  
 217  
 218  
 219  
 220  
 221  
 222  
 223  
 224  
 225  
 226  
 227  
 228  
 229  
 230  
 231  
 232  
 233  
 234  
 235  
 236  
 237  
 238  
 239  
 240  
 241  
 242  
 243  
 244  
 245  
 246  
 247  
 248  
 249  
 250  
 251  
 252  
 253  
 254  
 255  
 256  
 257  
 258  
 259  
 260  
 261  
 262  
 263  
 264  
 265  
 266  
 267  
 268  
 269  
 270  
 271  
 272  
 273  
 274  
 275  
 276  
 277  
 278  
 279  
 280  
 281  
 282  
 283  
 284  
 285  
 286  
 287  
 288  
 289  
 290  
 291  
 292  
 293  
 294  
 295  
 296  
 297  
 298  
 299  
 300  
 301  
 302  
 303  
 304  
 305  
 306  
 307  
 308  
 309  
 310  
 311  
 312  
 313  
 314  
 315  
 316  
 317  
 318  
 319  
 320  
 321  
 322  
 323  
 324  
 325  
 326  
 327  
 328  
 329  
 330  
 331  
 332  
 333  
 334  
 335  
 336  
 337  
 338  
 339  
 340  
 341  
 342  
 343  
 344  
 345  
 346  
 347  
 348  
 349  
 350  
 351  
 352  
 353  
 354  
 355  
 356  
 357  
 358  
 359  
 360  
 361  
 362  
 363  
 364  
 365  
 366  
 367  
 368  
 369  
 370  
 371  
 372  
 373  
 374  
 375  
 376  
 377  
 378  
 379  
 380  
 381  
 382  
 383  
 384  
 385  
 386  
 387  
 388  
 389  
 390  
 391  
 392  
 393  
 394  
 395  
 396  
 397  
 398  
 399  
 400  
 401  
 402  
 403  
 404  
 405  
 406  
 407  
 408  
 409  
 410  
 411  
 412  
 413  
 414  
 415  
 416  
 417  
 418  
 419  
 420  
 421  
 422  
 423  
 424  
 425  
 426  
 427  
 428  
 429  
 430  
 431  
 432  
 433  
 434  
 435  
 436  
 437  
 438  
 439  
 440  
 441  
 442  
 443  
 444  
 445  
 446  
 447  
 448  
 449  
 450  
 451  
 452  
 453  
 454  
 455  
 456  
 457  
 458  
 459  
 460  
 461  
 462  
 463  
 464  
 465  
 466  
 467  
 468  
 469  
 470  
 471  
 472  
 473  
 474  
 475  
 476  
 477  
 478  
 479  
 480  
 481  
 482  
 483  
 484  
 485  
 486  
 487  
 488  
 489  
 490  
 491  
 492  
 493  
 494  
 495  
 496  
 497  
 498  
 499  
 500  
 501  
 502  
 503  
 504  
 505  
 506  
 507  
 508  
 509  
 510  
 511  
 512  
 513  
 514  
 515  
 516  
 517  
 518  
 519  
 520  
 521  
 522  
 523  
 524  
 525  
 526  
 527  
 528  
 529



म ह्रीं क्लीं नमः शिवाय

ह्रीं क्लीं नमः शिवाय

ह्रीं क्लीं नमः शिवाय

ह्रीं क्लीं नमः शिवाय

ह्रीं क्लीं नमः शिवाय

ह्रीं क्लीं नमः शिवाय

ह्रीं क्लीं नमः शिवाय



ॐ नमो भगवते ॥ नमः भगवते ॥ ॐ  
समृद्धीकगवल्लीडभलभत्तु  
मु ॥ श्रीकगवत्तेरुवृभणधिः ॥

सगधुधुः ॥ श्रीककपा

भद्रुवतः ॥ समेयवत्तु

मेयमुपल्लवसुठधमे ॥

ॐ उठीरुन ॥ भवणम्

श्री  
कगी  
०



दगिष्टमभेकेमगं व  
 लडिमक्तिः ॥ मदेइभव  
 पपेष्टमेकयिष्टमभिम  
 मुसेडिकीलकन ॥ नेनमि  
 इडिमभुगलिनैनरदडि  
 पावक ॥ इष्टमुष्टनमः ॥  
 नरेनलेरयडुधनमिष

यातिममउ॥उडिउल्लनीहं  
नमः॥समुष्टयभरुष्टय  
भल्लेष्टमेधावराडिम  
एगहंपमः॥निष्टमवग  
उभुगुगलियंभनउवः॥  
उडिनंभकहंनमः॥प  
मृमेयउडुयल्लमउव

श्री  
रुगी  
३



वमदभूमडडिकनिधूक

हंननः॥ वनविणननिमि हानि॥

नवल्लवडीनिरडडिक

गडलकापधूहंननः॥

डडिकगृभः नषधउगृह

मः ननंमिडुडिमभुलि

ननंमडडिपवकः दमया

यवनः॥ नमो नैल्लययुधे॥

मिग्मेभ्रद॥ नमो नैल्लययुधे॥

मद्देयमिडिमिपयवेष

८॥ निष्ठभचगडभुभ्र

डिकवगयङ्ग॥ पमो नैप

उडुपगगडडिकवगयङ्ग

८॥ नवविणविमिवनीष्ट

श्री  
कृष्ण  
३



६  
भुयच्छ ॥ श्रीदक्षप्रीड्ड

पठेविनियगः ॥ स्रष्टुन

<sup>मूलनादवत्</sup> <sup>प्रकण</sup>  
पठयप्रीड्डिठिड्डगवडा ॥

<sup>तैश्चरमम</sup> <sup>धनय</sup> <sup>नम</sup>  
नगय ॥ नययवृभनगृषि :

<sup>गुभन</sup>  
डंयग ॥ भनिरभष्टेमदठ

गड ॥ स्रष्टुभडवडिंभीठ

गवडीभधूरमष्टयनीभ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

श्री उक्तवद्विषयम् ॥ वनेषु

उक्तवद्विषयम् ॥ वनेषु

रुयउपडुनेइयेनइयन

गडैलपुलः ॥ पूरुलिउल्लव

भयः पूरुपः ॥ पूरुपपप

एउयमुइवेइकपा॥ ये ॥

श्री  
रुगी

१



४  
लनभसूयदल्लयगीडन

उमृदननः॥ भविपनिधम

गविरेगुगीपलननः॥

पउवडुःभणीठिउःसुगुंगी

उभउंभदउ॥ वभरेवभुं

रेवंकंभरात्रभनन॥

रेवकीपरननं॥ दल्लयन

ॐ गङ्गा नमः ॥ ठी धर्म ॥ ३

ॐ यम ॥ ल ग ग ग नी

ले डल ॥ म ल ग द व डी न

ये ॥ व दि नी क ल व वे ल

डल ॥ स सु ड न वि क ल

धो म क ग म दे ण व डि नी ॥

मि डी ल ॥ म ल य ड वैः

श्री  
कगी

५



उननगी कै वडु के के मवे ॥

पग मद वर भगिश् भुल

गीउ उर विडुं न नग पुनक

के भगंदा कषां भिठण

वेरिउं ॥ ले के भग्न न पदरै

मदगदः पैयी यम नं मर ॥

कृया म्ग उडुं कलि मल

॥  
प्रसंभितः सुयमः ॥ प्रकंक

गतिवसलं पङ्कलं यत्

गिरिम् ॥ यद्वापुः मन्दव

रूपम् ननु भवम् ॥

यं वदन् वनं ननु मनुजम्

भुजगुम् <sup>भने</sup> वृषु वैः वैरैः भुज

पद्मम् निपतिष्ये न याति

श्री  
कृष्ण  
७



12  
येभभगः॥ एनवभुडउ

उमडेननभपमृडिये

॥ येगिने यमृडुनविमृम

रभग॥ मेवयउभेनमः॥

॥ लडिठनम॥ एउगधूनवम॥

<sup>पमभर</sup> <sup>मिनिडः</sup>  
रिणमकेइउमकेइमनवे

<sup>पमभिसुडः</sup> <sup>भयडः</sup>  
उययडुवः॥ मभकपडु

<sup>किंउवउः</sup> वैश्वकि <sup>न</sup> गउवउमस्य॥

०॥ <sup>वीडू</sup> मस्ययवम॥ <sup>उ</sup> मूषूउपा

<sup>पाउवमै हू</sup> <sup>वृदममयअपिउं</sup> <sup>रग</sup> <sup>उभिउमये</sup>  
उवनेकं वुरुमुदेनभुम॥

<sup>हैममहं</sup> <sup>भीपिनद</sup> <sup>वहै</sup>  
मुमदमपमस्ययवम

<sup>सकषय ज</sup> <sup>महिंरुव</sup> <sup>उमं</sup> <sup>पाउवमम</sup>  
नगव्वीउ॥ ३॥ यमूउंयपु

<sup>हैममहं</sup> <sup>विभीलं</sup>  
पउममसदमपडीम

<sup>मंनं</sup> <sup>वृदममयअपिउं</sup> <sup>यउउउं</sup>  
मम॥ वुरुमुपयपउ॥

श्री  
रुगी  
१





१८ १८ १८  
दक्षविश्वतुङ्गुगैलक्षवीद

१८ १८ १८  
वन ॥ मेठसुसुपययसुभ

भवेभदगवः १८ १८  
वावभदगवः ॥ ० ॥ सभकेड

१८ १८ १८  
विमिधूयडविठणसुसुभ ॥

१८ १८ १८  
नयकभगभैठभुमेठुड

१८ १८ १८  
वृवीभित ॥ १ ॥ वृवीभुसक

१८ १८ १८  
लक्षदपसुभभितिसुयः ॥

श्री  
८गी  
३





<sup>हीमभेनगदितभा</sup> म० कि० कि० उ० म० ॥ ० ॥ <sup>भवेय वडुभ</sup> मयन

<sup>हंगनड</sup> ध० म० च० ध० <sup>भुः</sup> य० प० ठ० गं० भ० व०

<sup>हीप्रभितभदे</sup> भुः ॥ <sup>गं० उ० व०</sup> ठी० ध० ने० व० कि० द० रु०

<sup>ध०</sup> ठ० व० रु० ॥ <sup>द० ए० न० भ०</sup> म० वा० प० व० दि० ॥ ०० ॥ उ० भू०

<sup>उ० द० न० व० न०</sup> म० स० न० य० द० ध० <sup>ध०</sup> उ० म० व० सु० ॥ <sup>हीप्रभितभदे</sup> पि० उ०

<sup>मि० द० म०</sup> न० द० ॥ <sup>न०</sup> मि० द० न० रा० वि० न० मृ०

<sup>क० न०</sup> मृ० ॥ <sup>व० दि०</sup> म० ह० र० य० <sup>उ० ए० न०</sup> पू० उ० प० व० न० ॥ ०३

मृ०  
ठ० गी  
०



३३:५५३

५५५५

उज्ज्वलसिद्धिदम्पत्यव

उज्ज्वल

वसिष्ठवतः

कर्मभाषः॥ भद्रमेव कृपतु

भद्रः कविरेवम्

उममवृमुमलिठवतः॥०३॥

३३:५५३

उज्ज्वल

वसिष्ठ

भद्रः

वसिष्ठ

उज्ज्वलसिद्धिदम्पत्यव

उज्ज्वल

वसिष्ठ

भद्रः

वसिष्ठ

कर्मभाषः॥ भद्रमेव कृपतु

भद्रः कविरेवम्

उममवृमुमलिठवतः॥०३॥

३३:५५३

उज्ज्वल

वसिष्ठवतः

कर्मभाषः॥ भद्रमेव कृपतु

<sup>मङ्गलः</sup> <sup>मङ्गलः</sup> <sup>परिष्कारः</sup>  
पुनस्तयः ॥ य इमं पुनस्तयः

<sup>व्यनककम्</sup> <sup>ही भवेत्</sup>  
मङ्गली न कम् व के ॥ ०५ ॥

<sup>मङ्गलः</sup>  
मनत्रु विरं यं ग ए उ उ उ इ

<sup>मङ्गलः</sup>  
परिष्कारः ॥ न कुलः म द र वः

<sup>मङ्गलः</sup> <sup>मङ्गलः</sup>  
सुमय्यय म ल्प य के ॥

<sup>मङ्गलः</sup> <sup>मङ्गलः</sup>  
०० ॥ क मृ स प ग म ध मः ॥

<sup>मङ्गलः</sup> <sup>मङ्गलः</sup>  
मिपं श्री म न द र वः ॥ ५

श्री  
००



२०  
एध्मन्विगठमभट्टकिम्भ

महिभूतिः  
॥ ३ ॥ ०१ ॥ म्पेपरेम्पेप  
देवमीश्वरः

॥ ३ ॥ ०२ ॥ म्पेपरेम्पेप  
देवमीश्वरः

महिभूतिः  
॥ ३ ॥ ०३ ॥ म्पेपरेम्पेप  
देवमीश्वरः

महिभूतिः  
॥ ३ ॥ ०४ ॥ म्पेपरेम्पेप  
देवमीश्वरः

महिभूतिः  
॥ ३ ॥ ०५ ॥ म्पेपरेम्पेप  
देवमीश्वरः

महिभूतिः  
॥ ३ ॥ ०६ ॥ म्पेपरेम्पेप  
देवमीश्वरः

प्रतिष्ठनयन

वनरयय ॥०७॥ मषष्टव

विज्ञान

वीर्य

हेतुवन

मन्त्रनः

मुडा मृष्ट गडुग धूका पपुः ॥

मभवे

मभूयते

पनरुं

ऊरुनरु

प्रवेडमभूमपेडपुनरुष्ट

मन्त्रनः

मीनरु

उभिममये

पडुवः ॥३॥ हृषीकेमंडर

वमन

उभं

पुडागु

वठुभिरुमदनदीपडमे

मन्त्रः

इयः

नयनरुयेमष्टेगंभुययमे

मीनरु

पवडुन

हेतुवन

पमभि

मन्त्रनः

मुडा ॥३०॥ यावरेडात्रिगीहृदं ॥

श्री

ठगी

००



<sup>पुस्तकना</sup> यिसूक <sup>भित्तना</sup> भानवभित्तना केम

<sup>केः मदनयापु</sup> यमदयिसूवृत्त <sup>हेकउहं</sup> भित्तना <sup>मभित्तना</sup> मभित्तना

<sup>यहभित्तना</sup> भित्तने ३३ यिसूभानववृत्त

<sup>उमे मडे</sup> दयापिउमभानगाडः ॥ ७३

<sup>नरेणभ</sup> मभित्तना <sup>मभित्तना</sup> मभित्तना <sup>मभित्तना</sup> मभित्तना

कीधिवः ३३ मभित्तना

<sup>वित्तना</sup> पवभित्तना <sup>मभित्तना</sup> मभित्तना

<sup>कउरुषु</sup> मन्कउ <sup>हये:मनयेमहे</sup> मेनयेनकयेमहे

<sup>रषं</sup> अणयिडुगषिडुमम ॥३॥ की

<sup>कीमपिड</sup> <sup>हियमहे</sup> <sup>मभमि</sup> <sup>मन</sup> अम <sup>धूगापउ</sup> भवेधम

<sup>भवेधमहं</sup> मदीकिउं <sup>मकुन</sup> उवरपअ

<sup>महिउन</sup> <sup>मिनिउना</sup> <sup>केवना</sup> मृउमभवउकुनिडि ॥३०॥

<sup>उभुकेवनायं</sup> <sup>कभुदना</sup> <sup>मकुन:</sup> उअपमृकुउपअ:पिडु

<sup>उऊना</sup> नषपिउमदन ॥ मुराद

म्री  
कगी  
०७



मंडला <sup>पञ्चमखा</sup> कृच्छ्र <sup>निर्दिष्ट</sup> इत्येवमापीति

षा ॥ ३३ ॥ सुसुग <sup>गच्छवना</sup> भुक्तमसुवमे

येन <sup>इति मनयेत्यु</sup> नयगधि ॥ उन्मी <sup>कृष्ण</sup> कृष्ण <sup>सुज्ञनः</sup>

के <sup>प्रज्ञानः</sup> उय <sup>भवतु भूतान</sup> भवतु <sup>भवतु</sup> वभिउ ॥ ३३ ॥

दयया <sup>उद्भूय, वमिउः</sup> ययया <sup>दः पञ्चवना</sup> विष्णुविषीरु

विष्णु <sup>उद्भवतु भवतु यय</sup> वीउ ॥ ३४ ॥ प्रज्ञानः ॥

मृष्ट <sup>वीह</sup> मं <sup>उद्भू</sup> सु <sup>उद्भवतु</sup> न <sup>दमोदक</sup> द <sup>पञ्चवना</sup> क <sup>पञ्चवना</sup> य <sup>पञ्चवना</sup> य <sup>पञ्चवना</sup> उ <sup>पञ्चवना</sup> म <sup>पञ्चवना</sup>

<sup>निकटभुं</sup> भुपभुं३२॥ <sup>विमोडते</sup> भीमभुम

<sup>पुननि</sup> गाङ्गा <sup>मेधप्रति</sup> भापरापरिमुष्टि॥

<sup>कभः</sup> वेधषस्रमगी <sup>कद</sup> मे <sup>मभ</sup> गिदस्र

<sup>उष्टुड</sup> एयड॥३५॥ <sup>गावीवणः</sup> गाङ्गीवंभभुं

<sup>काग</sup> दभुड <sup>वृद्धैवमदंभुति</sup> जैवपरिदृष्टे॥ वर

<sup>मभडे</sup> मकाभिवभु <sup>नभि</sup> ड <sup>भुडिंजुं</sup> ड <sup>इमप्रति</sup> वृडीवरमे

<sup>मभहृदयं</sup> भवः॥३०॥ <sup>मिदनि</sup> निमिडनिरपमृ <sup>मि</sup>

श्री  
रुगी  
०३



<sup>नीलपु</sup> विपगउनिकमव <sup>भापु</sup> नगसूय

<sup>भगविद्व</sup> <sup>राजवल्लभ</sup> <sup>महामे</sup> नुपममिदइमुल्लनगदव

<sup>उल्लभि</sup> <sup>रायं</sup> <sup>नीलपु</sup> ३०॥ नकडुविं यंनभन

<sup>महामे</sup> <sup>उल्लभि</sup> मगहंभापनिसाकिंनगहं

<sup>नीलपु</sup> <sup>नगहमे</sup> <sup>उल्लभि</sup> गविशुकिंनगैपीविउनव॥

<sup>मेधपुमिल्लभ</sup> <sup>महामे</sup> ३१॥ येधमउकाडुडिनेग

<sup>उल्लभि</sup> हंठिगाभापनिस॥ ३३भव

<sup>प्रभुः भक्तुः</sup> <sup>शान्ता शान्तकृतवर्तिः</sup>  
श्रुतयुग्मपुत्रश्रुतपुत्र

<sup>गुरुः</sup>  
म॥३३॥सुरादधिपुत्रः॥

भुषेवराधिपुत्रमदः॥मकुल

<sup>पद्मिनीः</sup> <sup>गुरुः</sup>  
सुसुगंधिभुलभुगुनिभु

<sup>उभाना</sup> <sup>भगवति</sup>  
भुषा॥३२॥पुत्रपुत्रुभिष्ट

<sup>भगवति</sup> <sup>श्रीगुरु</sup>  
मिथुपुत्रिभुषुभुन॥मधि

<sup>दिनिकगुरुभुषुभि</sup> <sup>पद्मिनी</sup>  
इलेकाष्टभुषुभिःकिंभु

श्री  
ठगी  
२



॥ दीनते ॥ ३५ ॥ विदहण्डुग

भुभकं किंभापं भभहउं श्रीनमः ॥  
धूत्रः कथातिभुः स्तनन ॥

मभिसि कोरवना  
पापमेवमयमभुदइउ

भगयिहना उडेडेः वेष्टः  
नडडायनः ॥ ३७ ॥ उमनद

भभवः भगयिउं कोरवना उधराडवनी  
वयदण्डुगधूमुषवुवन ॥

राडवना भगयिह भभयनः  
भननदिकपंदरभुपिनः

श्रीनमः  
भुभभणव ॥ ३१ ॥ यष्टु

कावः नदीक्षेत्रे

लेठनपुत्रमन्त्रः

उत्तमसुखिनिष्ठोऽयमः

अनन्य

उल्लसयेदुंमेपंभिइमूद

ਯਾਪੁੰ

८३३

शय उक्त ॥ ३५ ॥ कथं न ह

पाठ्यः

[illegible]

५३३

यमभूतिः पथरुमन्निवति

३१॥ उलकयदउरिधं

मधुवर्णिः

५५

अनरुमे

यमुनि नमः ॥ ३७ ॥ जल

नमो भगवते

कयेपु मृदुजलम

श्री  
ठगी  
०५



मरुः

गणपति

भवे

नउनः॥ १॥ नमो भूतनाथाय नमः॥

ह्रीं

नमो भूतनाथाय

ठिठवदुः॥ २॥ नमो भूतनाथाय

वीर्यं देवं शिवं

कनकनाथः

दुःखं प्रमृष्टुं तुलामुयः॥ श्री

देवकी

वृ

उदह

कनकनाथः

मधुभुवः क्लृपय यउवल्भम्

वरुणः

गङ्गा

कनकनाथः

१ः॥ २०॥ मधुभुवः क्लृपय यउवल्भम्

कनकनाथः

गङ्गा

धनं तुलामुयः॥ यउवल्भम्

कनकनाथः

गङ्गा

कनकनाथः

धनं तुलामुयः॥ यउवल्भम्

महिम्नैः

विभोः उलप्यनं वल्लभक

महंजवतिः

रघु

रुद्रियएतिभः

रकगकैः उड्डयुड्डयड्डयः

रुद्रः

रघु

उलप्यनं सुतः ॥ ३ ॥ उड्ड

रघु

उलप्यनं मनुष्यं रघु

मचन

रमतिः

रुद्र ॥ नरकनियं डवमठवडी

रुद्रभापकूडतः

रघु

रघु

रुद्र

रुद्र उड्डय ॥ २ ॥ रुद्रियड्डय

रुद्रियवतः

रघु

रुद्रपंकुं ववमिडवयन ॥

श्री  
रुद्रगी  
००



यउदेः

भगसिउं

उकुलनं

यम् <sup>५</sup>भापलेठनदडुम्

उहेगवउः

सजुनं

२तीकगदिउं

नगदिउः ॥ २५ ॥ यशिनमभु

उयुणगदिउं

उयुणवउः

उीकगममभुमभुयः ॥

कोगवाः

भङ्गमे

भगसिउति

मम

भापडं

उउगभुग <sup>५</sup>ददुमुमेकेनडमे

१३३

वउ ॥ २० ॥ भक्षयवरा । पव

कवविद्व

भङ्गमे

गवभउउपविभूः

भङ्गलनः भद्विग्विपमुभेपा

दङ्क

मगभदिउं

उउद'ड

विमउ ॥ विभु <sup>५</sup>ममगययं ।

३३  
५:१५

उडेलिउ भावमः

मेकं भंविधं नमः ॥२१॥

ॐ डि मी ठ ग व झी ड भु य रि ध

झु र भ वि रु यं यो ग म भु मी

व ल ल न भं व र म ल न वि ध रं

न भ प्र ष गे ष्ट यः ॥ म ल यः ॥

५:१५

उडेलिउ

भा वमः

५:१५

उड ष ढ य वि ध न भु प्र ल्भ नु

न भ म

५:१५

उडं

ले ढ म ॥ वि मे र नु भि रं व

धी

मी  
ठगी  
०१



<sup>चक्रवर्त्य</sup> <sup>नमः</sup>  
कनकवर्णमयभुवनः॥०॥४

<sup>उदयः</sup> <sup>मदं</sup>  
गवतुवरा॥ उदयंकमल

<sup>वभवे</sup> <sup>उत</sup>  
मिरंविधनेमभयभित्तन॥

<sup>नहोवैमविउं</sup> <sup>अनरपकं</sup> <sup>प्रयमकं</sup>  
मनदस्यधनभुवनकीडिक

<sup>देव</sup> <sup>भगवतु</sup>  
गगलन॥३॥ जैवमभगभः

<sup>देवतन</sup> <sup>उदं</sup> <sup>गलन</sup> <sup>वेष्टनभवि</sup> <sup>भदं</sup>  
पउनेउइयपयमृउकसंरु

<sup>भवेउलहं</sup> <sup>उदंगलन</sup> <sup>गलन</sup>  
स्यमिठलंउइइडिषुपगउय॥

ॐ ननुवरा कषंठी

पुनः भद्रं हेमपिउमं

धनदंभद्रं हेमपिउमं

अन ॥ ॐ ननुवरा कषंठी

प्रत्येये मद्रपुत्रक

मिप्रदवगिअन ॥ २ ॥

नभगियिद्र म कद्रुठका

उडनदददिमिद्रनठव

उमने कद्रियिउं हिद्रपुभउंमधि उमंभन

म्वेयिउंठेदुगपीदले

कायिद्र एनकभन

के ॥ दद्रउकभंमुगुउदि

श्री  
ठगी  
०३



38  
देवकुक्षीयठिगः ॥ १ ॥  
<sup>अंगरे</sup> <sup>ठिगमि</sup> <sup>दण्डिठिगि</sup>

॥ ५ ॥ उयेउमिम्भः  
<sup>उये</sup> <sup>नएनीमि</sup>

कउगिगीयियमुएयेन  
<sup>किग</sup> <sup>सभकं</sup> <sup>ऊमजं</sup> <sup>एयंऊमः</sup>

यसिवनेएयेयः ॥ यनेव  
<sup>नभन</sup> <sup>लेष्टि</sup>

दहनरिणीविधममुव  
<sup>लीविउमिळनः</sup>

मुउः प्रभापणुगधूः ॥ ७ ॥  
<sup>डिउउः</sup> <sup>भभाप</sup> <sup>केवः</sup>

कधटमिधैपदउमुठवः ॥  
<sup>कध</sup> <sup>ठवये</sup> <sup>नधू</sup> <sup>ततिः</sup>

३६  
प्रसंकीभि वं पद्मे भेदयुक्तं भनः  
पञ्चमिद्वयममं प्ररुत्र

यक्षुं जमले कविप्रति निरुपयुक्तं कथय  
उः॥ यक्षुयः भुत्रिस्त्रिउं वृदि

उक्षु उव नक्षुतः मक्षुप  
उक्षुमिष्टुमुदमपिभं इक्षु

मक्षुगुं नक्षुभि  
पत्रम ॥ १ ॥ वदिपूपमृत्रि

नक्षुगुं इमीजरा यक्षु उःपि मेपक्षुं  
भमभनष्टुष्टुक्षुक्षुक्षु

पञ्चमिद्वियामम ॥ मव

पक्षु पक्षिं मक्षुगुं कक्षु  
पिष्टुमवमपत्रमसुं गष्टु

श्री  
रुगी  
०७



॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सिद्धिस्तु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

२५  
उक्तं हेतुव  
भुगुणमधिराणिपट्टन ॥ ३ ॥

मस्तयवरा ॥ एवगुडाहमी  
मस्त कषयिद्व मीतः

केमंगुठकेमः पगुप नय  
वस्तः देवडागु वस्तुकिष्ट

उष्टाडिगविरुगुडाउष्टिगुप  
वस्तुकिष्ट मीतः कषयिद्व भेनंउवरा

द ॥ ७ ॥ उगवराहमीकेमः प  
वस्तु मीतः मीतः

दमविवरुगु मेनयेनय  
वस्तु देवडागु भेनयेः इयः

अष्टविषीरुभिंरंवरः ॥ १० ॥  
विषमगुण मस्तवरा

श्री  
रुगी  
३०



मेकर दुग दःपेन वन  
ठगव नव स॥ सम सृ नम

चक्रनः पडिउ वन कषयनि  
सम्पूरु वरं सुठ धन॥ ग

भउन लीवयुजना दःपेन कुचडि  
उभनगडं मुसुन नम शिडिप

छुनिरः कयमिग  
डिउः॥००॥ नेद्व वदेउन  
नपभं चक्रनः १०३ नपनः

भनद्वेनेमेरु नाठिपः॥ नयेव

केनरः  
नठ विष्टमः भवेवयमडःप

भगवद्वं लीवयु चक्रिना मरीन  
गम॥०३॥ सेदिनेमिष्टपरे

<sup>अभयवर्ध</sup> <sup>कदम्ब</sup> <sup>उपश्रुत</sup>  
देके नमं यवने र ॥ उष

<sup>महमगीरप्रिः</sup> <sup>ऐरव</sup> <sup>अभिज्ञ</sup>  
येद दुग्ध धिगीगमुइनम

<sup>नदप्रि</sup> <sup>अद्विषविषयमभुत</sup>  
हृदि ॥ ०३ ॥ मइममभुके

<sup>मल्ल</sup> <sup>मीठव</sup> <sup>उल्लव</sup> <sup>भाप</sup> <sup>पम</sup> <sup>यक</sup>  
उयमीडिप्रभापमपमः ॥

<sup>उगल्ल</sup> <sup>नमवत</sup> <sup>नविह</sup> <sup>उनविषय</sup>  
मुगमपयनेनिहमुंभुडि

<sup>मदभु</sup> <sup>मल्ल</sup> <sup>यगमप</sup> <sup>पीक</sup> <sup>कदिप्रि</sup>  
कभुठगउ ॥ ०५ ॥ योदिनदपुडु

श्री  
ठगी  
३०

<sup>अद्विष</sup> <sup>यमपिडम</sup> <sup>उल्ल</sup>  
उपमपंयमपद ॥ मगमः



वेदगुं ५१४: भेदय

पभापणीमिउड्डयक

मकेकाति

चमहृ

वठपति

लड्ड॥०५॥वमउविरुड्ड

भउ

चमउ

महृ

इवेगपि

वेनठविविहड्डमउः॥उठय

विज्ञयं मयमउः

हनिठिः

गधिरुधेउभुनयभुकरम

विममगदिउं

रनीदि

ठिः॥००॥मविनमिउउमि

५१५॥

उंममंलगडा

विभुगिउं

मियेनमवमिउउं॥विमम

रपगदिउं

५१५॥

कविमउः

मममगिउं

महृयभृभृनकसिद्धुनद

वेदेकगी <sup>नामपुत्रः</sup> एउ मगीनः  
डि॥०१॥ मउवउः मेरेद॥

उदः <sup>कविः</sup> लीवयु  
विउमैः मगीरिः॥म

<sup>नामपुत्रः</sup> <sup>पुलेययु</sup> <sup>उदः</sup> <sup>पुत्रः</sup>  
नामिनेयुमेयमुउमः सुसु

<sup>मसुन</sup> <sup>कविः</sup> <sup>उदः</sup> <sup>एनडि</sup>  
मठगड॥०३॥ यापनेवाउद  
<sup>आउकं</sup> <sup>कविः</sup> <sup>उदः</sup> <sup>एनडि</sup> <sup>मउ</sup> <sup>देडि</sup>  
उगंयसैरंमउउदउं॥उठ

<sup>एनडीउः</sup> <sup>उद</sup> <sup>आउयडि</sup>  
उेनविएनीडि॥नयंदडिउ

<sup>मियउ</sup> <sup>नामपुत्रः</sup> <sup>आमपुत्रः</sup>  
दउउ॥०७॥ नएयउः शिष्य

श्री  
ठगी  
३३



कभित्रीपभयं बुद्ध भव कविप्रति  
उव क म ग य न य क उ उ वि उ

मं लक्ष्मि उं कुरु  
वनकुयः ॥ म र उ उः सु सु उ

उमं पण्डितं नमिष्यते भियमल्ल  
य प ग ल न द ट उ द ट न न म गी

लक्ष्मि नमसदि उं कवि उ  
॥ ३ ॥ वे र वि न मि न वि उ य प

उमं लक्ष्मि नमसदि उं  
व म ल म वृ य न ॥ क पं म भ न

भगवति  
ष प उ के प उ य उ द उ क

वभुलि पण्डितानि  
म ॥ ३० ॥ व म मि ल् ल नि

५३  
वेदेवरी नामगुणः तडे मरीगः  
ॐ ०१ ॥ मृदुवदुमेदेद ॥

उदरः कषिगः लीवधु  
विदुष्टे मरीगिः ॥ म

रामदिउधु वल्लेयधु उदरेः पदुउर  
रामिनेधुमेयमुउमृदुधु

मृसन कषिगः उदरः एगडि  
मृठगड ॥ ०३ ॥ यापनेवाउद  
आउके कषिगः उदरः एगडि मडे देडे  
उगंयज्ञेनंमृउदउ ॥ उठ

एगडीउः उद आउयडि  
उनविएनीउ नयंदडिन

मियडे रामदरप्रति मरामरप्रति  
ददुडे ॥ ०७ ॥ नएयउशिय

श्री  
ठगी  
३३



कभित्रीपमभयं सुदुःखं कविभूतिः  
ॐ वक्रगिरि यक्षुः पवित्रं

कभित्रीपमभयं सुदुःखं कविभूतिः  
वनकुयः ॥ कभित्रीपमभयं सुदुःखं कविभूतिः

सुदुःखं कविभूतिः  
यपगिरि ॥ कभित्रीपमभयं सुदुःखं कविभूतिः

कभित्रीपमभयं सुदुःखं कविभूतिः  
ॐ ३० ॥ वेदविनमिनं निहंयाप

सुदुःखं कविभूतिः  
कभित्रीपमभयं सुदुःखं कविभूतिः

कभित्रीपमभयं सुदुःखं कविभूतिः  
षापाउकेपाउयाडिदुडि

कभित्रीपमभयं सुदुःखं कविभूतिः  
ॐ ३० ॥ वासामिहिल्लावि

वेमरकोम

हऊ

गतीष्टि

यषाविदयनवनिगहृडिअ

भउष्टः

महानि

अवेमरकोम

गैपगलि उषमगीगलि वि

हऊ

गहृडि

दयलील्लहृडिनिमेयडि

नीयनि

पुदमं

नमूरेऊचडि

नवनिरेदी ॥ ५५ ॥ केनं छिराडि

अगुणनि

पुदमंमदंऊचडि

मग्निः

मभुगलि केनंरुडिपावकः ॥

उदमं

उदीऊचडि

एनं

विधंऊचडि

नयेनंलेरयडुपेनमेपयाडिअ

कषः

केनंनदं

पुद

मदंनदः

उद

नउः ॥ ५५ ॥ महेरुयगरुहय

श्री  
ठगी  
५५



<sup>त्रैलोक्यभद्रः</sup> <sup>विषयभद्रः</sup>  
मन्त्रेष्टमिधूपवर॥ निष्ठुभव

<sup>मवेष्टनप्रभः</sup> <sup>रुद्रः</sup> <sup>कश्चनरुद्रिः</sup> <sup>यगउतः</sup>  
गडः भुग्न गयनयंभरउतः॥

<sup>मयकः</sup> <sup>उद्</sup> <sup>गुमिनीयः</sup> <sup>विक्रमभद्रः</sup>  
३२॥ मविउयनगिष्टुयनवि

<sup>उद्</sup> <sup>कष्ट</sup> <sup>उडेडः</sup> <sup>ममभका</sup> <sup>रुद्र</sup>  
कदयनमृउ॥ उम्भरेवंवि

<sup>उद्</sup> <sup>मेकंकां</sup> <sup>यष्टेनि</sup> <sup>मनडां</sup>  
ईनंभुमिगिडुनरुमि॥ ३५॥ म

<sup>उद्</sup> <sup>हममि</sup>  
षयेनंनिष्ठरउंनिठुवमष्टमेवि

<sup>उद्भद्रपि</sup> <sup>मेषज्ञ</sup> <sup>उद्भं</sup>  
३६उं॥ उषधिइमदरुद्रिनेनं

मेकंकां येष्टेठवमि  
मेरिउमदमि ३० एउचुदि

मिष्ठिः मिष्ठिः  
एवमद्वुवं एउमउचुरा ३

उदेउः मदीकरेउ मेकंकां येष्टेठवमि  
मरुपरिददेउरंमिउमद

मि ३१ मवृकुलीनिहुउनिवृ  
मप्रकएमीनि

रकएमएनि मल्लर मप्रकनिमम मरुनि  
उमएनिठगउ मवृकुनिम

उमिनिमये किंदः मं सुकउउं  
नेवउउकपरिमेवन ३३ सुगुद

मीहुउ उमपः सुमं  
वदमउकमिरेनम सुदव

श्री  
ठगी  
३२



<sup>कषयति</sup> <sup>उत्तरप्रकरणे</sup> <sup>परमः</sup>  
सुसुडिउषैवरातः॥ सुसुद

<sup>सुसुद</sup> <sup>सुसुद</sup> <sup>उत्तर</sup>  
वसैवरातः॥ सुसुद

<sup>मलगाति</sup> <sup>परमः</sup> <sup>सुद</sup>  
वसुनसैवकसुडि॥ सुसुद

<sup>मलगाति</sup> <sup>मलगाति</sup> <sup>मलगाति</sup> <sup>मलगाति</sup>  
निहृनवष्टयंसेदमचमृठ

<sup>उत्तर</sup>  
गु॥ सुसुद

नहंमेशिडुगामि॥ सुसुद

<sup>सुसुद</sup> <sup>मलगाति</sup>  
मनधिसावेकनविकंमिड

<sup>उभयकां</sup> भद्रमि॥ <sup>उभय</sup> ष्टुष्टुयष्टुकेय

<sup>नक्षत्रि</sup> टड्डइयष्टनविष्टु३॥३०॥य

<sup>उभय</sup> ~~रुष्टुलठममुष्टुयष्टिपप~~

<sup>निकट</sup> वंभुनसुगभपवडं॥ <sup>विदं</sup> श्रीपनः <sup>उभय</sup>

<sup>नक्षत्र</sup> कड्डियः <sup>रभ्रति</sup> थडलठडुयष्टुनीम

श्री  
ठगी  
३५

<sup>उभय</sup> मभ॥ <sup>यकि</sup> ३९॥ <sup>उभय</sup> षषरड्डुमिगंभुं॥

<sup>उभय</sup> भद्रभनकरिष्टमि॥ <sup>उभय</sup> उडःभु



<sup>कश्चिपुं</sup> <sup>वसेपि</sup> <sup>इह</sup> <sup>लठमे</sup>  
पमेकीडिंरदिहपपमवधु

<sup>वसेपि</sup> <sup>भक्तिकुड</sup>  
मि॥ ३३॥ मकीडिंरदिह

<sup>वसिष्ठि</sup> <sup>उव</sup> <sup>रामदिउं</sup> <sup>मभक्त</sup>  
निकषयिष्टिउवयं॥ मभक्ति

<sup>वसमः</sup>  
मिउमसकीडिंरदिह

<sup>ठयेन</sup> <sup>महामा</sup> <sup>मभक्त</sup>  
मुउ॥ ३२॥ वयममपगउंम

<sup>मभक्त</sup> <sup>मदमुगः</sup>  
मुउहमदगषः॥ यधमगु

<sup>वसुधैवि</sup> <sup>मभक्तः</sup> <sup>गमुनि</sup> <sup>नीमहं</sup>  
मउउमुयमभिलपव॥





सुदं ३३

पू.३३

४६

सुदामा

ॐ नमः

ੴ ਨਾਨਕ

१८३

<sup>भद्र उवाच</sup> <sup>विश्वयद्वक</sup>  
वैठेयउ॥२॥ वृक्मययि

<sup>एक भंभरं चक्षुः</sup>  
कवसिरेकेदउमनन॥३॥

<sup>अणिकमापयुक्तः सुउगदिः</sup> <sup>वृक्षनिर्</sup>  
मापहनेउसुवसुयेवृक्मयि

<sup>यंतां</sup> <sup>५३३</sup> <sup>वमं</sup>  
नं॥२०॥ यमिमंयधिउंवरं॥

<sup>कषयिपुत्रि</sup> <sup>अहनिः</sup> <sup>वेमवमनः</sup>  
ध्वरात्रिविपुत्रिः॥३॥ वेरवरा

<sup>मन्त्र</sup> <sup>वकिपिउ</sup> <sup>ठवडि</sup> <sup>अनेरुका</sup> <sup>कषयुः</sup>  
उःपउनठरुमुडिवमिनः॥

<sup>कामाभदिः</sup> <sup>भुजजः</sup>  
१७॥ कभउःभुजपग॥३॥

श्री  
ठगी  
३१



५५  
अफलपूरं ॥ श्रियविषयद  
<sup>विषयकेन विरुद्धि गमने</sup>

लंठिगैमुदगाडिंप्रति ॥ १३ ॥ ठगे

मुदरुमकुनं उयापहउयेअं ॥  
<sup>लगुण वेदतत्त्व गत मनस</sup>

वृवभायाडिकवसिः भगणे  
<sup>विप्रयधिक एव</sup>

नविणीयउ ॥ १२ ॥ इगुटविषय  
<sup>रुहवति रिगुलगेमः</sup>

वराविमुगुटठवस्तुन ॥ विम  
<sup>रिगुलगदितः भगवत उक्तः पगदितः</sup>

श्रिविठमकुमुनिदेगकेममु  
<sup>पेटकुः वनकुलः मन्त्रपितृकः</sup>

अथवाः १३४५ श्येल्पं ललासवे  
अवनः २५ यवनजः उपनः

अचरः ललासवे उपनः  
भवतः मं प्रउरके उव भवे

उपनः  
षवेरेषु वरु मृवि एनउः

कमलः उप न  
२० कम् एव शिक म्मु मं द

उपनिषयः १३ व कमलः  
लेषु कम् रान म् कम् दल

उव उप नितं कमलः  
दउउ म्उ म्ग म्क म् ११

मभाषिः विदय  
योग म्क म्क म्क म्क म्क म्क



<sup>पञ्चम</sup> <sup>मिह</sup> <sup>पमिह</sup> <sup>उरु</sup>  
पनस्यय॥मिहूमिहूःमनकु

<sup>अभय</sup> <sup>कष्ट</sup>  
कुडमनद्वयेगउष्टउ॥२५॥सो

<sup>पणमं</sup> <sup>सैवेगाउ</sup> <sup>पञ्चम</sup>  
हवाकमवस्रियेगामुस्र

<sup>सुवे</sup> <sup>उककं</sup> <sup>उकुंउर</sup> <sup>मिहः</sup>  
य॥वस्रिम॥मविहूयप॥२६॥

<sup>कनेहमेकाः</sup> <sup>सुनमिहः</sup>  
कलकडवः॥२७॥वस्रियउ

<sup>हाति</sup> <sup>अभय</sup> <sup>डे</sup> <sup>पट</sup> <sup>पप</sup>  
दडीदउरुमकउमधूउ॥

<sup>उदेहे</sup> <sup>कमयेगाउ</sup> <sup>मिनम</sup> <sup>येगकम</sup>  
उममृगययष्टभुयिगःक

<sup>भयं</sup> भयं <sup>कमलानि</sup> कमलानि ॥ ५१ ॥ कभं वसु

<sup>हृदयः</sup> हृदयः <sup>कमलानि</sup> कमलानि <sup>अनिः</sup> अनिः ॥ ५२ ॥ यत्तुदिदलट्टमनीधिः ॥

<sup>वचनः</sup> वचनः <sup>निजः</sup> निजः <sup>अनं</sup> अनं <sup>अभयः</sup> अभयः ॥ ५३ ॥ अमरुविनिमृत्तुपयंगष्ट

<sup>वचनः</sup> वचनः <sup>अभयः</sup> अभयः <sup>अनं</sup> अनं <sup>अभयः</sup> अभयः ॥ ५४ ॥ यत्तुदिदलट्टमनीधिः ॥

<sup>भेदः</sup> भेदः <sup>अभयः</sup> अभयः <sup>अनं</sup> अनं <sup>अभयः</sup> अभयः ॥ ५५ ॥ कलिलं वसु चृडिउरिष्टि ॥

<sup>अभयः</sup> अभयः <sup>अभयः</sup> अभयः <sup>अनं</sup> अनं <sup>अभयः</sup> अभयः ॥ ५६ ॥ उरगुत्तुमिनिचयं मृत्तुवृष्टम्

<sup>कलिलः</sup> कलिलः <sup>अभयः</sup> अभयः <sup>अनं</sup> अनं <sup>अभयः</sup> अभयः ॥ ५७ ॥ उमृत्तु ॥ ५८ ॥ मृत्तुविपुडिअव

श्री  
रुगी  
३७



५८  
उयस भुमृडि विज्ञल ॥ मग

एवस ल वृष्टि उयस गभवपु

मि ॥ ५३ ॥ वसुवस ॥ मिउपु

मृके ठप मग ठि मृके

मव ॥ मिउपीः किंपूठपड किम

मीडवूड किम ॥ ५२ ॥ ठगवव

वस ॥ पूरुदं उयस कभ ॥

<sup>मन्त्र</sup> मवयडननिगडन <sup>भावभग</sup> उड्डेव

<sup>उभिकुन कष्ट</sup> उडाउधुन भुडपूळमुगमुड ॥५॥

<sup>उड्डेविभग</sup> मापधुन भुडपूळमुगमुड ॥५॥

<sup>गडकः इरीदडग</sup> उड्डेवः वीडगगठयरेपः ॥५॥

<sup>भुडपूळः दचिः कष्टः प्रथः भवेपवप</sup> उपीमनिकमुड ॥५॥ यः भवड

<sup>भेदगडिः वधु</sup> नठिभेदमुड उड्डेवमुठमुठन ॥

<sup>प्रवर्तनप्रति उपरकति प्रथम वडिः</sup> नठिनरुडिनुमेधुमुभपूळ

श्री  
ठगी  
३०



ॐ ॥ ॐ ॥ यमभंदा  
<sup>भुज</sup> <sup>मिच्छति</sup>

उमयकुमनीवभवमः ॥  
<sup>४३५</sup> <sup>भवेद्विषयेह</sup>

ॐ यनीमियउरुः उमृ  
<sup>विषयेह</sup>

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ विषया  
<sup>भुज</sup> <sup>मिच्छति</sup>

विनिवडुनिगदगृयेदि  
<sup>विषयेह</sup> <sup>४३५</sup>

नः ॥ रभवतां ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ  
<sup>४३५</sup> <sup>मिच्छति</sup> <sup>भवेद्विषयेह</sup>

भूगनेवडुउ ॥ ५७ ॥ यउउदाधि  
<sup>भुज</sup> <sup>मिच्छति</sup>

<sup>नमः</sup> केतुय<sup>दुर्ग</sup>पनपमृविपमृतिः॥

<sup>भजननीलनि</sup> उद्विगल<sup>मृ</sup>पमृषीनिदः

<sup>दण्ड</sup> विप्रमंठनः॥०॥ <sup>उद्विगल</sup> उनिमवा

<sup>निकृ</sup> किंवेय<sup>भवणः</sup>पृयउचुमीति

<sup>भजनः</sup> मयः॥ <sup>पृयय</sup> वमीदियमृमृ

म्री  
रुगी  
३०

या<sup>मृ</sup>उमृपृहृपृतिधृतिः॥

<sup>भजः</sup> ००॥ <sup>पृयय</sup> एयडिविषययंमः॥



मुप

विषयेषु उद्देशे

भानुप्रभातः॥ भानुः॥

उद्देशे

द्वयम्

स्य यत्कर्मः कर्मिणोऽपि

एतत् ॥ ७३ ॥ शिववतिम्

मेदः

भानुः

कर्मः

॥ भानुः भानुः भानुः भानुः

भानुः

भानुः भानुः भानुः भानुः

भानुः

भानुः भानुः भानुः भानुः

भानुः

भानुः

भानुः

भानुः भानुः भानुः भानुः

<sup>महार्जवः</sup> श्रीसूर्यसुम्नः <sup>अथै</sup> सुकुव

<sup>उयउभनः</sup> मैविणैयः <sup>वैदत्तं</sup> पुमग्रगति

<sup>रुपेति</sup> गसुडि <sup>विदुनिधनवै</sup> ०२ पुमग्रमव

<sup>नामः</sup> सुव नंदनिरुभृपएयड <sup>उयउ</sup>

<sup>विदुनभनमः</sup> पुमवरेडमेह <sup>वीध</sup> सुवसुप

<sup>भिरुवति</sup> दवडिधुड <sup>विदुड</sup> ०५ <sup>इति</sup> नाभिवसु

<sup>वभवणवभु</sup> गयडुभनग <sup>दकिः</sup> यडुभनव

श्री  
रुगी  
३३



<sup>हवगभदिउभु</sup> न॥ नय० कवयउः मा० उ०

<sup>नभगदिउभु</sup> मा० उ० उ० उ० मा० प॥ ०० ॥ उ० उ०

<sup>विषयंगलुठं</sup> य॥ ०० <sup>विषयंगलुठं</sup> दिरागउं <sup>मेउः</sup> य॥ <sup>मेउः</sup> म० न० वि०

<sup>उ० उ०</sup> य० उ॥ <sup>उ० उ०</sup> उ० म० उ० <sup>उ० उ०</sup> पू० ल० व० य०

<sup>नेकं</sup> व० व० <sup>लने</sup> भि० व० <sup>उ० उ०</sup> भू० मि॥ ०० ॥ उ० म०

<sup>उ० उ०</sup> म० म० <sup>उ० उ०</sup> म० म० <sup>विषयंगलुठं</sup> दि० नि० ग० दे० उ० न०

<sup>भचउः</sup> भ० च० मः॥ <sup>विषयंगलुठं</sup> उ० उ० य० ॥ ०० ॥ उ० य०

<sup>प्रमथ</sup> <sup>वृद्धिः</sup> <sup>भ्रि</sup>  
उहृमुमुपूहृपूडिपूडि॥

<sup>वृद्धिः</sup> <sup>महिः</sup> <sup>मवृद्धिः</sup>  
यनिमभवकुडनंअंअंए

<sup>प्रमथ</sup> <sup>हृदी</sup> <sup>मंभं</sup> <sup>वृद्धिः</sup> <sup>वृद्धिः</sup>  
गाडिमंयभी॥यमुंएगूडि

<sup>महि</sup> <sup>हृदी</sup> <sup>वृद्धिः</sup>  
कुडनिमनिमपमृडेनः॥

<sup>प्रमथ</sup> <sup>महि</sup> <sup>वृद्धिः</sup>  
००मुपुदममममलपू

<sup>एनामि</sup> <sup>ममृडि</sup>  
डिधुंममममपःपूविमाडि

<sup>येन</sup> <sup>ममृडि</sup> <sup>कभनः</sup> <sup>प्रमथ</sup>  
यमुवड॥उमुडमयपूवि

श्री  
रुगी  
३३



मडिमवेममडिनापुडि

नकमकमी॥१॥विष

यकममवाचुनाञ्ज

डिमिदुदः॥निम्ननिग

दक्षःममडिनागिगमुडि

॥१०॥पुष्वुमीमुडिपाउ

वेनपुष्वुविगुछडि॥मुह

६६  
रुद्राक्षि ७३ क म वि प ये पि इन्द्र म ३५ भिं  
मृमउकलोधिब्रह्मनि

रभेति  
वल्ममसुडि ॥ १३ ॥ ७३ ॥ ७३ ॥

ठगवम्मीडभयनिषडुव

द्वविष्टायोयेगमभुमी

ठक्षस्तनभंवायेमद्वय

गेनमसिडिडियेष्टयः ॥ ७३ ॥

लनवर ॥ ७३ ॥ ७३ ॥ ७३ ॥

श्री  
ठगी  
३२



<sup>इषा इम</sup> <sup>देवीनम</sup>  
मुनउवसुलनरुन॥

<sup>उम उदेउः</sup> <sup>कठिने</sup>  
उडिंकम <sup>धिये</sup> मवि

<sup>रेगमि</sup> <sup>देत</sup>  
ययभिकेभव॥०॥वृ

<sup>मिनिउरेव</sup> <sup>वमनेउ</sup>  
मिमेववक <sup>वुडिने</sup>

<sup>मदमिदां कठिपुमीव</sup> <sup>उदेउः</sup> <sup>इमं कभव</sup> <sup>कषय</sup>  
दयमीवमी॥ उरकवम

<sup>मिनिपेनद</sup> <sup>कदपव</sup> <sup>अडि</sup> <sup>मदपः</sup>  
मिनिउयेनमेयदनपु

<sup>नरे</sup>  
यम॥३॥ठगवववय॥

निर्दिष्टमिदं विविक्तं निष्कृतं  
<sup>विश्रुतं</sup> <sup>श्रुतिः</sup>

<sup>प्रचक्षितं</sup> <sup>कथितं</sup> <sup>उक्तं</sup> <sup>दिशति</sup>  
गुणमयानप्यहं

<sup>हमे</sup> <sup>नित्यं</sup> <sup>कर्म</sup>  
योगनमस्तु न कर्मयोगी

न योगिनः ॥ ३ ॥ न कर्मम

<sup>मकरन्द</sup> <sup>मक्ति</sup> <sup>श्रुति</sup>  
नमस्तु नैकं नमस्तु ॥

<sup>महामकरन्द</sup> <sup>मक्ति</sup>  
नमस्तु नमस्तु नमस्तु

<sup>नमस्तु</sup> <sup>प्रमथः</sup>  
मणिगच्छति ॥ नदि कश्चि

श्री  
ठगी  
३५



<sup>कर्मणि</sup> <sup>कर्मणि</sup> <sup>भीषणे</sup>  
इमाधि एउडिष्टकम

<sup>कर्मणि</sup> <sup>कर्मणि</sup>  
वउ कदउछवमःकम

<sup>भवेत्</sup> <sup>विद्युते</sup>  
भवःपूतडिष्टेनुः॥५॥

<sup>विद्युते</sup> <sup>प्रत्ययः</sup>  
केमद्रियांमंयभृय

<sup>विद्युते</sup> <sup>मेउभा</sup> <sup>विद्युते</sup>  
मुमुभनभाभृगन॥उम्रिया

<sup>प्रत्ययः</sup> <sup>कर्मणि</sup>  
उविभृगडुमिष्टसगभृ

<sup>कर्मणि</sup> <sup>यःप्रत्ययः</sup>  
उमुउ॥०॥यम्रिया

विन्दु

उरु

मनमविद्यष्टगुणसु

उदिये

३॥ केमेष्ट्रियेः कर्मयोग

भग्नगदिउ

विचित्रेकवि

ममउः भविमिष्टुउ ॥ १ ॥

वृद्धलेजं

मेधः

यउउनकमवेकमष्टय

मरुपडा

विचदः

कर्मः मगियाइधि

उव

नभिकुडि

कमगदिउथु

येउनप्रमिष्टुयकर्मः ॥ ३ ॥

विष्कदल

कमलि

यहउकर्मः तुइलेकियं

मृ  
ठगी  
उव



70  
विष्णुं  
कमलः॥ उरुं कभके

मल्ल  
भद्रादिः  
अन  
डेयभुमभः॥ मगरा ७॥

मल्लभदिः  
उरुदिः  
भनदे  
मदयल्लपुल्लभुपुग्व

वक्र  
मल्ल  
मपुल्लपुतिः॥ नननपुम

वीङ्गलठ  
मल्लः  
यभकं  
उभकभरणी  
विष्टप्रनेवविभुष्टकभप्र

देवः  
ठवउरु  
मल्ल  
क॥०॥ रेवठवयउवेवे

वयउ  
यभरा  
मरे  
रेवठवयउवः॥ यभरा

ठवन्तुः कन्तुः उरुः शम्भुः  
ठवयतुः मयः पग्नवपु

ष००० कटिउता विविडं युष्टं द्युः  
उधुगुगदिवरव

रमति वल्लेनः गतिताः द्रवैः  
राम्टुयः ठविडः ॥ ३ ॥

रुडना गुरुः द्रवैः यमः उरुगति मेगपव  
रुडनपूरयेहियरुडुमुन

यमः यल्लु मेधठेऊः  
एवमः ०३ ॥ यल्लु मिधुमि

अष्टः मचपापैः  
नः मरुमपुतुमचकिनि

ठेहति यमः यमः यमिनः एतः  
येः ॥ रुसुडेडुधं पापये

श्री  
ठगी  
३१



<sup>मंजुवति</sup> <sup>सुदं</sup>  
पयट्टुडुका ७३ ॥ ०३ ॥

<sup>उरुहो</sup> <sup>मचकुडि</sup> <sup>मेभाडा</sup>  
मनमुपतिरुडाविपल्लट्ट

<sup>मंजुवति</sup> <sup>उरुहो</sup>  
यत्रमभुवः ॥ यल्लुमुपति

<sup>मेभा</sup> <sup>कमेडुवः</sup>  
॥ पल्लट्टियल्लः कभमगमु

<sup>वेदेडुं</sup>  
वः ॥ ०२ ॥ कभवृद्धमुपंवि

<sup>एमीदि</sup> <sup>वेकं</sup> <sup>पगवृद्धे कृवं</sup>  
प्रिबुद्धमभगमुवं ॥ ३

<sup>जेदुडे</sup>  
मभुवगउंरुमंनिहंय

ॐ पृथिवी उत ॥ ०५ ॥ पृथ्वी

पृथ्वी उत ॥ ०५ ॥ पृथ्वी

ॐ पृथ्वी उत ॥ ०५ ॥ पृथ्वी

ॐ पृथ्वी उत ॥ ०५ ॥ पृथ्वी

ॐ पृथ्वी उत ॥ ०५ ॥ पृथ्वी

ॐ पृथ्वी उत ॥ ०५ ॥ पृथ्वी

ॐ पृथ्वी उत ॥ ०५ ॥ पृथ्वी

मी  
गी  
३३





<sup>५५:</sup> नमिउरकरयः॥लिक

<sup>नेकायं</sup> मद्दनेवाधममदटक्क <sup>गीकंजचा</sup>

<sup>येरेमि</sup> नदमि॥३॥ <sup>यहउउ</sup> यदुरा <sup>कीडि</sup> रागि

<sup>होयः</sup> मधु <sup>उचव</sup> मउउरवउर <sup>कनिपेलपः</sup> ॥३॥ <sup>मः</sup> म

<sup>कीडि</sup> यदुरा <sup>कीडि</sup> अनउलिकउय

<sup>उचवकीडि</sup> नवउउ ॥३०॥ <sup>मभ</sup> ननेय <sup>महान</sup> उगमि <sup>कवडि</sup>

<sup>कालीयं</sup> कउवुं <sup>शिनिकविषय</sup> डिधलकेषुकिउने॥

श्री  
ठगी  
३०



<sup>नृप</sup> न न वा पु <sup>नृप</sup> न न वा पु <sup>नृप</sup> न न वा पु

<sup>कमविषये</sup> सकम् <sup>३३</sup> ३३ <sup>३३</sup> ३३ <sup>३३</sup> ३३ <sup>३३</sup> ३३

<sup>नृप</sup> न व पु <sup>कमविषये</sup> य ए <sup>नृप</sup> उ क म <sup>नृप</sup> उ क म <sup>नृप</sup> उ क म

<sup>ममने</sup> म न व <sup>ममने</sup> म न व <sup>ममने</sup> म न व <sup>ममने</sup> म न व

<sup>ममने</sup> उ म व न <sup>३३</sup> ३३ <sup>३३</sup> ३३ <sup>३३</sup> ३३ <sup>३३</sup> ३३

<sup>नकंनि</sup> मि ने लि क <sup>नकंनि</sup> न उ दं क <sup>नकंनि</sup> म म

<sup>कमविषये</sup> य दं <sup>कमविषये</sup> म क म <sup>कमविषये</sup> म क म <sup>कमविषये</sup> म क म

५३  
मपददभिभः पूरः ॥ ३२ ॥

मज्जकमद्विमुं भयवा

उवाडिऊउ उवाडिमुंमु

पमज्जिकीकुलिकम

इदं ॥ ३५ ॥ नवसिठरं

नयमृदुनं कमज्जिनं ॥

एवयउपकमलि वि

मी  
गी  
२



इनी भवणः जेचन  
सुदुतः भमरग्न ॥ ३० ॥

दंडनि इच्छितुः  
पुवउरियन ॥ ३१ ॥

भवइ  
लेः कम्भमवमः ॥ ३२ ॥

मदंकोभीडिभुदंडः कम्भः  
दङ्कविभुदंड ॥ ३३ ॥

एनडि पामउदजी  
म भिडिउडे ॥ ३४ ॥ उद्विडु

मन्त्र गुल्कम्भः विरुगभुय  
मदउदेगुल्कम्भविड

उद्विडु विषयभु शवउडे  
गयिः ॥ गुल्गुल्कम्भविड ॥ ३५ ॥

<sup>मडा इड मडंकीरि</sup>  
उडिगद्वनमह ३३५

<sup>गुलिहः</sup>  
दडेनु मभरुः महनु

<sup>प्रमना ममचला</sup>  
गु कभन उनवडुवि

<sup>प्रमना मचला पउयेडा</sup>  
रिगश दडुवित्रविगल

<sup>ठगगी</sup>  
येउ ३७ मयि मवर्क

<sup>मभद मष्टकुपे मभम</sup>  
म मरुम एडुम उम

<sup>उमरदिउ मभउगी मडं</sup>  
विगमी विमम कडं यमु

मी  
ठगी  
२०



<sup>नमः</sup> सुविगडङ्गः॥३॥ <sup>भयः भय</sup> येने

<sup>ऊचति</sup> मडभिरंनिहमनडिधुति

<sup>भयः</sup> मयवः <sup>मयमदिताः</sup> मयवतुनमयतु <sup>उः</sup>

<sup>ऊचति</sup> ननुडिधुतिनेमडन <sup>भय</sup> भय

<sup>भयः</sup> डेडेधिकिमयिः॥३०॥ <sup>भयः</sup> य

<sup>गन्धमेयपङ्कः</sup> डेडगहिमयंनु भवप्ल

<sup>भयः</sup> विगुंभु <sup>एनीदि</sup> विमि <sup>गडना</sup> नधुन <sup>मेअगदिता</sup> न  
वि

<sup>मडा इव मङ्गकीति</sup>  
ॐ तिगङ्गनमस्तु ३॥३३५

<sup>गुलिहः</sup>  
दडेगुमभरुःमस्तु

<sup>प्रमथा मभचला</sup>  
गुमकभम ॥ इतगडुवि

<sup>प्रमथा मचला पउयडा</sup>  
यिगशुदडुवित्रविमल

<sup>ठगयति</sup>  
येड ॥३७॥ मयिमवर्क

<sup>मभरु मष्टकुपे मभम</sup>  
ममभरुमष्टकुपेमभम ॥

<sup>मुवागदिडः मभगदिडः मङ्गल</sup>  
विगमीविममङ्गलपुमु

श्री  
ठगी  
२०



<sup>मउष्टः</sup> सुविगडङ्गः॥३॥ <sup>मउष्टः</sup> येने

<sup>ऊचति</sup> मउभिरंनिट्टमनडिधुडि

<sup>मउष्टः</sup> मउवः <sup>पूडमदिङः</sup> मसूवडुनमयडु <sup>मउष्टः</sup>

<sup>ऊ</sup> <sup>ऊचति</sup> नउडिधुडिनेमउम <sup>मम</sup> मयु

<sup>मउष्टः</sup> डेउधकिममिः॥३०॥ <sup>मउष्टः</sup> य

<sup>गुलेपुदेमपडः</sup> डेउमहिमयंनु <sup>मउष्टः</sup> भवए

<sup>मउष्टः</sup> विगुंम <sup>एनीदि</sup> मु <sup>गडना</sup> पिमूनधुनरा <sup>मउष्टः</sup>   
 वि

<sup>भयवं</sup> उमः॥३३॥ <sup>मधुकोटि</sup> मरुमंरोधुअ

<sup>सुदीयप्रदः</sup> भूः <sup>हूमी</sup> पूठउ <sup>दिगुल्लज</sup> हूजवनधि॥ पूठ

<sup>गळुडि</sup> डिंया <sup>भवकुडनि</sup> डिकुडनि <sup>दः</sup> निगुदकिं

<sup>वकिष्ठिज कोटि</sup> करिष्ठुडि॥३३॥ <sup>पङ्कगदि उंदिगभू</sup> अद्रियभू

<sup>विधये</sup> द्रियभू <sup>भंभुडि</sup> उरगामुषेष्टवभु

<sup>रग</sup> उं॥ <sup>उधयेः</sup> उयवमनगामुडि <sup>गगडिधे</sup> उ

<sup>पुनभू</sup> ह्मृप <sup>मह मड</sup> रिप <sup>महउः</sup> डिने॥३॥ मय

श्री  
रुगी  
२९



४२  
उदीयमानं गुणादिभिः परममङ्ग  
मुपमाविशुः परममङ्ग

भयङ्करं भयं  
मुनिविशुः मुपमेनिषं

वैश्वं वयं यकः  
मेयः परममङ्गवदः॥

३ १३ कुनदत  
३५ मन्तुवदः मन्तुवदः

हेतिः मन्तुः कति  
नययुयपायंगडिप

उदीयमानं वयं  
नयः मन्तुवदः वयं

दण्डः ३४ हेतिः  
वयं वयं वयं ३ः ३५॥

ठगवनवास॥ कभापक्षि

पपक्षिगुरु॥ मभसुवः॥

मदमेनगदापप्राक्कु

नभिदवैरि॥ म॥ ३१॥ पुमे

नत्रियउवदिदषारमे

भलेनरा॥ यषलेनवउ

गठसुषाउनेरभवउ॥ ३३॥

श्री  
गगी  
१३



वलिङं कनेन  
सुवडं हनने डन हनने वि

विह्वेति ॥  
ह्वेति ॥ कभडये ॥ के

मल्लः कः सितप्रदं सुमित्र उव  
त्रेयस्य पुनः ॥ ३७ ॥

महामतीनि कभड  
उन्मिया ॥ ननिवसिगम  
भुवं कष्ट उन्मियः भद्रकण्ठि  
विष्णुनमस्तु ॥ ण्डेविनेद

कभः वलिङं मरीति ॥  
यदेय हनन वड्डेदिनं ॥

उदतिः प्रथमं  
२० ॥ उममडु भद्रिय ॥ ७५ ॥

<sup>निगृह्य</sup> <sup>पञ्चतः</sup> <sup>परिनि</sup>  
नियन्तुः उच्यते ॥ पापान्

<sup>भगव</sup> <sup>कथं</sup> <sup>श्रुतव</sup>  
पूजयेत्तु विष्णुना

मनः ॥ २० ॥ उच्यते ॥

<sup>उच्यते</sup> <sup>उच्यते</sup>  
पापान् प्राप्नुयान् ॥ पा

<sup>उच्यते</sup>  
भनः ॥ मनममुपागच्छति

<sup>उच्यते</sup>  
वसुः पातमुमः ॥ २१ ॥ एवं

<sup>उच्यते</sup> <sup>निगृह्य</sup>  
वसुः पातमुमः ॥ २२ ॥

श्री  
गंगा  
२२



४६  
मङ्गा <sup>भय</sup> <sup>मङ्ग</sup> दिमइरादर

दिकमङ्गुं <sup>दः</sup> मङ्गम ॥ ३ ॥

७ डिम्रीमवम्रीडभय

निषड्वरुमविमृयंये

गमभुम्रीनभल्लनभंवर

रेकल्पयिगिनभडुडिये

पृथः <sup>भय</sup> म्रीमवमवम

ॐ अष्टाय कविः  
ॐ अं विवमुडयेगं प्रकुव

श्रीमदं समदितं - अष्टः भगवत्पुत्रं  
दमवृय विवमुडयेगं

कविः अं कुतलं कविः  
दमवृय विवमुडयेगं

येगं  
अवपुत्रं पगपुत्रं भिन्नं

अं अष्टः भगवत्पुत्रं  
अवपुत्रं पगपुत्रं भिन्नं

अं अष्टः भगवत्पुत्रं  
अवपुत्रं पगपुत्रं भिन्नं

आपवयेगं अष्टः भगवत्पुत्रं  
अवपुत्रं पगपुत्रं भिन्नं

अष्टः

श्री  
भगी  
२५



<sup>५४१५५</sup>  
यिगः प्रकुः पागउनः ॥ ठङ्गे

<sup>अम मिहः</sup>  
भिने मापणे डिगुं छे

<sup>उडमंरदं</sup>  
उमुउम ॥ ३ ॥ सङ्गवरा ॥

<sup>ममकनीवं कुरुय शिङ्कनीवं</sup>  
सपंगठवउं अपंगरुं

<sup>भट्ट</sup>  
विवसुतः ॥ कषमेउमि

<sup>एनमि प्रमं</sup>  
एनीयं डुमगिथिउवनि

डि ॥ श्रीरगावउवरा ॥

४९  
मनेकनि अमृदिडनि  
रुद्रनिनेवृडीडनि॥२॥

निउवराज्ञन॥ उष्ट्रंवेक  
एनमि हगवरा एनमि

मचा॥ नड्वेडपागुप॥  
एनमि सुकुन

५॥ म॥ धिमत्रवृयाड  
लमगदि मेधि नमगदिडड

हडननीसुगधिमन॥ ५  
शुभी

वडिंभुमठिषायमभूय  
मयं सुदीयं सुपिड उष्ट्रयमि

शुड्मायय॥ ७॥ यरुय  
यमिरमिकन

श्री  
हगी  
२०



५०  
मदिपुत्रयानिबुवाउठ

मङ्गल कृति उभित्तन  
गउ मङ्गुनगपुत्रय

उभित्तन  
इनेमएभिदन ॥ १ ॥ परि

मङ्गल  
इयमपुनविनम

मङ्गल मङ्गल उभित्तन  
यसमङ्गल ॥ १ ॥ मङ्गल

उयमभुवभियगेय

मम  
गे ॥ ३ ॥ मङ्गल मङ्गल मङ्गल

<sup>प्रमथः</sup> <sup>स्वयं</sup> <sup>भाग्यं</sup> <sup>उत्तः</sup> <sup>मन्त्रिभ्यः</sup>  
नेपयिवोड्डड्डः हड्ड

<sup>विरुद्धः</sup> <sup>वर्धयति</sup> <sup>हृत्</sup> <sup>गच्छति</sup>  
पंथनरुनेड्डननेड्डि

<sup>हृत्</sup> <sup>गच्छति</sup>  
स्तन॥७॥ वीडगगठयड्ड

<sup>हृत्</sup> <sup>गच्छति</sup>  
मथयामनपमिडाः॥८॥

<sup>पविडः</sup> <sup>गच्छति</sup>  
दवेष्टनड्डमपड्डनम

<sup>प्रमथः</sup> <sup>यत्नः</sup> <sup>यत्नः</sup>  
वगगड्डः॥०॥ यययाम

<sup>मन्त्रिभ्यः</sup> <sup>वर्धयति</sup> <sup>हृत्</sup> <sup>गच्छति</sup>  
पयष्टड्डं मुयवठएष्टं॥

श्री  
गंगा  
२१



<sup>भने</sup>  
मभवउउवउउनरष्टःपा

<sup>भचर</sup> उभवमः॥००॥ <sup>उछउः</sup> कङ्कउःक

<sup>मङ्गजवति</sup> <sup>अंम</sup>  
अंमिभियरउउदर

<sup>मङ्ग</sup>  
वउः॥ <sup>मङ्ग</sup> क्षिपुंदिमनुष्टलेक॥

मिभिरुवडिकभर॥०३॥

<sup>मङ्गजवति</sup> <sup>उछउः</sup>  
गउचलंभयभयुगु

<sup>उछउः</sup> <sup>कङ्क</sup> कभविठगमः॥ <sup>मङ्गकभविठगम</sup> <sup>कभविठग</sup> उभकउ

ममधिनं विष्णुकुतुम्भ <sup>मउचं</sup>

वृयन ०३ नमं कम्भलि

<sup>नेधं कचडि</sup>

लिंपडिनगे कम्भलेय

<sup>उक्त</sup>

<sup>अनुयः</sup>

ज ॥ अडिनं यिठिल्लगडि

<sup>is</sup>

<sup>अनुयः ठनुनं सिलड</sup>

कम्भविमगष्ट ॥ ७ ॥ प

<sup>आउनेः एणु कचिठिः</sup>

वंल्लददउं कम्भपुवगधि

ममधुठिः ॥ जगकमेव

श्री  
ठगी  
२३





कर्मभाविम

गदनकर्मगाडिः०१क

रकदम् (रकि यमेपनय रकर भाविम कर्म)

मृष्टकर्मयः५मृष्टक

यमेपनयभा (मेयवष्टमभु)

मृष्टकर्मयः॥मवृष्टि

मवृष्टि विमि मेयडिष्टधोपा (मोय कर्मकरव)

ममृष्टकर्मयः॥मवृष्टि

यमेपनयभा (मोय)

कर्मवडः॥०३॥यमृष्टमचे

कर्म (कर्मरुद्रमिष्टकल्प)

ममृष्टकर्मयः॥मवृष्टि

गमृष्ट (हृष्टय रमि यमृष्टेखलिमडि)

वलिडः॥मृष्टकर्मयः॥मवृष्टि

श्री  
रुगी  
२७



कमलसु इभापरधर्मा मयानक्रे

मन्त्रं उवाच ॥ ३ ॥

इवेदकिड कमकिडलकेमप

ॐ ॥ इडा कमफलमभे ॥

इदेयादभा सुगेमभडि मुम्यमभे

कममविनि

निडइयुनिगम्यः ॥ कम

करवनेडि रो किडु करवकि

एठिपूवडिपिनेवकिडिडु

मे मी मयानक्रे मुमयभे गठिभडि

गिडिभः ॥ ४ ॥ निगमीदड

उडिडमगीरमभे इविमडिभगेया कमरमभे

गिडुडुडुडुमचपरिगूदः ॥

मगीरके केवलं कम करवने

मगीरकेवलंकमउचव

एवम (हेतु) भाषा

५५

धेडिकिलिधन ॥३०॥ यरु

नरभुभा वसुकेभा लकनभा विमिषमाला नयेनिमि

मृगलभमनुषुसनुडडिवि

गेभडे

मकरभु

हगठर

मिषाविमि

भङ्गः ॥ मभाभिसुवमि

चमिए विमति

करोडा किडाडि दग ह देवानो हे

सुगठदधिननिठठडे ॥३३॥

मेभडिभमभु

भकलेभडे

एरनभा विमि गेलिभुडि

उरभु

गडभमभुभडुभुल्लनवभु

उरभु

यल्ल कगल उरभु

उरडमः ॥ यल्लयगडः

करवने

कभभा

भगेया नैनेभमएर हे

कभमभगं पुविलेयडे ॥३३॥

श्री  
ठगा  
५०



परं वृक्ष मा प्रमेत ॥ परं वृक्ष मा उरुत ॥

वृक्षय ॥ वृक्ष वि वृक्ष

परं वृक्ष मा उयभ ॥ परं वृक्ष रुमेभति ॥ परं वृक्ष मा

गै वृक्ष ॥ रुतं ॥ वृक्षोत

इवमते ॥ गच्छि ॥ वृक्षमत्रि कर्मणि मभाडाभते ॥

नगउवृ वृक्षकप्रमना ॥

देवतामने ठिययल्लुमा

न ॥ ३२ ॥ ऐवमेवपगेय

पेगीसुग ॥ मेवत्रहि ॥ वृक्षमचेमा

ल्लयैगिरः पदपामते ॥ वृ

चग्रभा ठिय यल्लु माघल्लुकरमते

प्रमवपगेयल्लयल्लेने

देभानहि ॥ कर्नाउहदिका

विपल्लुद्राति ॥ ३५ ॥ मिडमी

ॐ ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय नमो

नीलकण्ठाय नमो भगवते वासुदेवाय नमो

देवनागरी

मन्त्र (उद्दिष्ट) विमि

षड्भुजः मन्त्रः

नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय नमो

यान्त्रिकः मन्त्रः

भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय नमो

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमो

कर्मणि नमो

मन्त्रः

नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय नमो

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमो

देवनागरी

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमो

श्री  
गंगा  
५०



भामदेवदेयल्ल उभयदेवदेयल्ल पंगेकेयल्ल

सुदयल्लउभयदेयल्लयोग

उभेथो दिय थगुवना लउया

यल्लउभयदेयल्ल॥भुएयल्ल

नभेयल्लदि पंगीमुग उगीवउभे

॥नयल्लसुयउयःभमिउव

प्रथमया नभेभा ववविमि देभनकु

उः॥३३॥नयनेसुदुडिपू

भुएया नभेभा ववभा वपाय नभेववा भुएया

॥पुनपुनउषापो॥पू

नभेभा नयनया नभेभा वव भलुवडाउयेडकिउ

॥पुनगडीमसुपुनय

भुएयभभा पिण लगेभडे हिय

मथगयः॥३०॥वप

गतिभुतिपिनमभु

पूज्य

पूज्य विमि

नियतदगपुण्डुल

देभानकै

मोवेति

सभा

षड्द्रुति॥ भवेयुडेयल्ल

यल्लगनवने यल्लभडेदेगेभुति भापमभु

विमियल्लरुपिउकलभपः॥

यल्लभादेभेडा दभडापिववने गकुनकै

३॥ यल्लमिधुभउकुल्लि

वक्रभा

मरेभा

नडलेककै

याडिवक्रननउम॥ रायं

यल्लभुभा

कडिपडलेक

निकेभियल्लभुउउउंउ

देच

मभेठे मभाये यल्ल

नभउम॥ ३०॥ एवंवक्रविर

श्री  
रुगी  
५३





पूकृतभडे नेवभडे उपदेमा कगनाके

उपदेमा कर्नाकु

अनमेवय उयरेकृडिउ

उभा ह्रवमा ह्रनेष पम्भङ्गमा पञ्चवन

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३२ ॥

यथा ह्यनभा एतेऽकिङ्कितं विधिय नष्टनभा

यष्टुङ्गनपुनमिदमेवंय

जमपेयाने सकायाष्ट देव

यवहूनभडेकुडा भारेया

मृभिपुव॥ येनकुडुमे

उठाप/ बुद्धम/दिनि प्रवपउभिविमि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३५ ॥

येनये (कृक) यये निमिभगिया (पापा)

याधिरुमिपपटुः भवे

करवने

भाषा एकपात्रमि

हृत्पापलङ्घनः ॥ भवेद्भक्त

श्री  
७गी  
५३



104  
कृदा एमते भाभा उरापस

वनैपव रि नंभउमिष्टमि ॥

वेषलेने सीधु यगु (कंभकगनाकै)

३० यषैणंमिममिमुगि ॥

दे हूनया नभैयगु

ठमभउमउत्तन ॥ हनकिः

भागिना कंभना (कंभकगनाकै)

भचकम लि ठमभउमउ

भोपाटे नहूदमा भडे दिवे पविश

उषा ३१ नदिहूनेनमप

उडलिकभा विमिकै ३ पानययिगमडे

मंयविउमिदविहूउ ॥ उमु

मिहामुमु वडुमडे परभादुमविमि

यंयैगमंमिसुः कलेनउ

हृन्ना (कुं)

मूत्रभृते लहना (कुं)

निविशति ॥ ३३ ॥ मूत्रवर्ज

हृन्मा उद्विष्ट लगे भंडे गति भंडि ॥ नृ यमभे

ऊहृन्तु उद्विष्ट भय उद्विष्टः ॥

हृन्मा लगे उ किडा भडा भेनया कले

हृन्लवृ पामा विमरि

हृन्ना (कुं)

भत्त (डि)

ॐ गिगमृति ॥ ३० ॥ मूत्र

मूत्रभृते भिन्दमभि सुद्धमभे नमरा

मूत्रमृत्तनमृत्तमयद्र

कुं

नृ यमभे लेका (कुं)

विनमृति ॥ नृ यमभे लेका भुन

नृ यमभे लेका नमरा पामिभृत्त

परिभापे भमयद्रः ॥ २ ॥

श्री  
ठागी  
५२



एतन्मतेऽपि कर्मभूते एतन्मतेऽपि

योगमष्टमुकम् एतन्मतेऽपि

नेमतिमतेऽपि

सुखेनवनेभा

मिन्नमंमयम् सुद्वयम्

नकम् गङ्गा नदी

देश

नकम् निरुपद्रितम्

उद्विष्टि नष्टनम् विमि उपलोभते

२० उभयसूत्रम्

उभय विमि सुसर्वने

एतन्मतेऽपि नमि तपः

कुल्लनामिरुतः मिद्वेनं

मतेऽपि नमि गङ्गा नदी एतन्मतेऽपि नमि तपः

मंसययोगम् उद्विष्टि

उषः

४३३३

ॐ डिमीठगवल्लीडभयनि

षड्भुवद्भुविष्टायं योगमा

भुमीठगवल्लीडभयनि

अमभुमयिगेनभयउउष्ट

यः ॥ मलनवरा ॥ भुमं

कममल देवदलु ठिय हूनाडि

कम ॐ दलु नदंगम

श्री  
गगी  
५५



वापननक्रिदभासु यमेरेतु सभन(रुन)चक्रय

मंभमि यस्केयाण्डये

भिउद्रुउभासु पलेभा० सनुगडे वान

कंडमेवृदिमुनिस्त्रितं०॥

हूनडि कमडि

कावगुवरा मवृमकम मं

ममि कगवन इवेवय

यिगसुनिःम्यमकावृः॥

डेभनाहना कम केभा निस्त्रयभा निमि हूनकेयगा

उयमुकममवृभाकम

रैके

वनेणिमि

यिगविमिष्टु३॥३॥ ह्यः

रैकेमैधू येमे निशकतिन नकष्टिकतिन

मनिष्टमवृभायिरमुधु



दुयम्भु भलोपाठे

नकदाडि॥ विष्णुसुदिनद

दे धामध्वन (गहनदिमि भकलानां कृ

वदेभापंमृगुदुनसुडे॥३॥

कम (हृत्त किन्नेकिन्ने भत्तवापनानां कृ

भद्रयेगीपपगुलः पूव

नगएले इना भल्लमृकेभाति

रुडिवपाडिउः॥ एकनपू

रुदवने करपाठे इनहि भुवि

मिउभमृगुठयविरुउठ

कला यमा कमेसुरा भुवनं कृ

नन॥२॥ यडुपैः पूपुडे

हृय हृनयो भुवनं कृ

भुनंउमृगैगधिगभुडे॥

श्री  
ठगी  
५०



प्रक<sup>मयेष्ट्या</sup>  
कम<sup>डियेगाडि</sup> येम<sup>रुनाहे</sup> मोरुना

एकेम<sup>सुयगंरायः</sup>पष्ट

हु

कमडि

डिभयसुडि॥५॥मसुमसु

दे

रूपभा<sup>पुवनभा</sup>किडे

भदरुदेसुःपमसुनयि

सुनमे

सुनडकमसु<sup>पमसुभा</sup>एवने

गडः॥यगयडिभनिबुझ

इकभा<sup>नयसुले</sup>पुवभा<sup>हे</sup>

सुनड

सिरे॥सिगसुडि॥६॥य

कमसु<sup>निमल</sup>सुडमसु<sup>एिनमडि</sup>दमसु

गयडुविमुसुडुविडिउ

एनिमडि<sup>सुयमसु</sup>मडिउपा<sup>सुडनयिमि</sup>पाननिमगीमसु

अडिउसुयः॥भवकुडा



कावनेडि लेखनगानाके

इकउअउचत्रधिनलि

मीन नडि किम कगना कुंभा

पउ॥१॥नेवकिस्त्रिङ्गी

कयेया सुमंभु भाजन(हेपरभाइभा एनवने

डियङ्गिभट्टेउउडुविउ॥५॥

लकुवने कएवने भुग(लकएवने देकवने गहुवने

मुद्रुवनेमसिप्रवमग

मुद्रा गरवने मुद्रवने एपवने

मुद्रुपडुमन॥३॥पुलप

एववने गएवने भक्रेवाएवने एववने

विमल्लुडुत्रिभविमि

अदिया उदियकिना विमिपना विमि

धत्राधि॥७॥दियलीमिय

श्री  
ठगी  
५१



१२  
षवेज किज येण णगवने

जीषववुडुडिणयन॥७॥

पंगुडभाकिमि षवेजकिज कमा ममा शवेज किज

वुडुणयकममि

कगना हे ये मे

लेपममे ममएनाहे

मंडकुर्कीडियः॥लिष्ट

१ मेपुनभा पपमडे पंपभा पप्रग एन

उममपयेनपम्माडुमि

पपुमडे

मगीमडे

उरुमडे

वमम००॥कयेनमम

वपुमडे केवलि जट्टिपमडेडि

वपुकेवलैगिडियेगपि॥

येगीसग

कमना (कगनाहे)

ममा शवेज

येगिनं कमउवडिममंड

03



नकरं मन्त्रे पाठव( नकरना यन्त्रि पाठि कइ

नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं

उपपन्नं

कमगुप्तेयव

नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं

नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं

यंगं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं

नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं

नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं

नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं

नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं

नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं

नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं

नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं

नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं

नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं नकड्डं



उभन(प्रमंभन(प्रदमंभेप०

उनाङ्गः॥उपभगिष्टवह्नु

एनन( भूषेले(काज(हे मेपमं

नंप्रकमयंउडिउद्यन॥०॥

उद्यभङ्गन(विमि वणुमभु मेया सुममभु उदिए(नगु भुउ

उसुसूयभुमङ्गनभुत्रिभूउ

उषेविमि गभुमभु गङ्गन(हे मन्ना

इगयः॥गमृष्टुभनगव

एननभडे कलिभठिधापमभे

डिंल्लनविउडकल्लपः॥०१॥

विशुउविनयमभुभा

वङ्गनभ

विशुविनयमभुनेवुद

गवेविमि दभुविमि

हनेभ(विमिडि गङ्गलुभा विमिडि

गविदभुनि॥सुनिरेवसुप

श्री  
मगा  
५७



ॐ

ॐ

ॐ

कमपाडि उः भगवतिः ॥

ॐ ॐ देव उरि उः भगवति

पंभाष्टि उरि उः भगवति ॥ विष्णु

दिभमं वृद्ध उरि उः भगवति

नाममाल (मभलि)

पुनरु (शिवे)

किड नरुः प

उरि उः ॥ ॐ ॥ नरुष्टि उरि

मभेमभलि शिवे उरि किड उरिः पम

यं पृष्टि उरि उरि उरि उरि

मभिवलु मभे

मभले

पम उरि उरि उरि

यं ॥ भिगवति भिगवति भिगवति

वक्रमा विमि १८८३

प्रविष्टुदुःखिभुः३३३

निष्ठुनिभिन विमि यन विमि गलिभुति नमुद्रम

हृदयेधुमकुडुनिष्ठु

रुजानाहे पुद्रमविमि धेभेधुप मेपवद्रुमदि वेगमदि

नियद्रुपम ॥ भवद्रुपेग

पुद्रमसे धप नमगमेमज्ज भवनहे

यद्रुद्रुभुपमकयनमुद्र ॥

वेभेपलेपठेभ नम विमि उपलेभउ

३० ॥ यदिमंभुनरठेगा

रुग-नापकि उद्रुममुडेभ सुदिह

म्री

मपयनयावेउ सुद्रुद्रु

मगी

उममु दे न उमना विमिलगानहे गल्ले

वद्रुकेवियनउधगभउ



॥८॥  
दिक्कृते ऽवलोकना विमि  
चमोपमये

वृत्तः ॥४४॥ मन्त्रोऽद्वय

दमनभा कृते गुणान्तराङ्गैर्मा भक्तला वनभा निमि

मन्त्रं पूज्यगीर्वाणैर्द्वय

कभभा कृते निमि उपलब्धे भेदे वगा

उ॥ कनकपुष्पविवर्गम

मया वेणी मेया भूषणभूषे भक्ति

यत्तुः मभापीनः ॥४५॥

मन्त्रभूषणभूषे मन्त्रभूषणभूषे उभेपाठ

यत्तुः मपिदुर्गन्धमुषा

मन्त्रभूषणभूषे ति भवे दे सगेभ (पेगभा)

उत्तेतिरेवयः ॥ मयैर्गीर्वाण

भक्तिभूषणभूषे भक्ति गळना कृ

निवर्त्तु इन्द्रकुडिगच्छति ॥

४५



शुक्लान्ति वृक्षमा मज्ज

लठ्ठेवृद्धनिचाम्भ

केसरा मरीगेभतिथामभु

षयःकी कल्पः॥

किन्नेभतिनायेभु वनेभदपनवा भारिदया

मिन्नमुणयड'अनःम

कुत्रा पचेभा दिमरभा विमि लगेभु कामर

वकुडदिडेटाः॥३५॥क

रूपगु वेनीसुगन गति भतिउन्नमभिन

भरिणवियुत्तनंयडीनं

मपागे वृक्ष मज्ज

यडमडमं॥यमिडिवृद्ध

पगलुं भति उन्नमभिन

निचाम् वउउविमिड'अनं॥

३०

श्री  
हृगी  
००



मन्मथरुद्रादिगुह्यं

मैवकुम्भेः॥ पूजये

भगवद्भक्तभक्तुगमाः

ॐ ४१ यडेयि यमनिव

सुमनिद्रियगयः ॥

विगडमुठयरेयभर

भडावमः ॥ ३५ ॥ ठिडुगं

यस्य भा उपमा भागिनय लेकना दरे कहे भा

यस्य उपमां भवलेकन

देन भिषग भागिनय कुडना दरे

देसुं भद्रं भवकुडनं

एने अकिं अ भिमकुगभा गके नहि

हृदयं मातुभद्रुडि ३७

उडिमीरुगवनीडमपान

यडुवृद्धविष्टयं यिगम

मुमीवृद्धसुनभं वरुमवृ

भयिगनभपुष्टमेष्टयः ॥

५

श्री  
रुगी  
०३



मङ्गलार्चना कर्मकेटना

श्रीगणेशाय नमः

कर्मणि कर्म कर्मणि कर्मणि म कर्मणि

उः कर्मणि कर्मणि कर्मणि

गैडियः मर्मणि मर्मणि मर्मणि न नति

एननिगमिनमस्तुयः ॥०॥

यमापनमम कर्मणि यमापनमम कर्मणि

यंमर्मममिडिपुद्गदिगडु

हृन्ना उमा एनाना सु दे न पणेषाठे कर्मणि हृन्ना

विम्विपाडव नदिमस्तु

मङ्गलपयैगीवडिकस्तन ॥

तमनम (७) कुरुने ये येगम कभया  
करन

पुननकिमुनेदिगंकभक

रथन (कुं) ग ए ले

येगम पषेभा

१॥ ममुडे ॥ येगपुखुमु

भडेभा उमेभया मपुग करन रथके

उमेवमनःकरन ममुडे ॥

उलिपलेपठे उद्रियन विषयविमि

३॥ यरादिनेमियडेपु

नकमम विमि अठिकेभभएन (कुं) मभिनया

नकभभनयखुडे ॥ भवम

महलयन गएवने येगप उभडे डिलि

कल्पभनृमयियगपुखुमु

रथन (कुं) कुरुन (कुं) उरुमडे

मेमुडे ॥ २ ॥ उमुरेगइनाइ

३

श्री

ठगी

०३



परमात्मा न परमात्मा उपास्यमुक्तनहि

परमात्मा

नान्यत्रवमस्येड

उत्तमं वरुण परमात्मा मष्टा परमात्मा

इवह इति वरुण इवगिप

भवे वरुण परमात्मा उत्तमं

गङ्गाः वरुण इन्द्रमुमु

उत्तमं परमात्मा यय उत्तमं लिनेषा देवमहेति

यन इव इन्द्रादिः यन

महामहामा वधमा विमि सुप्रय

इन्द्रमुम इव इन्द्रादिः यन

महामहामा वधमा लिनेषा सुप्रय महामा

इव इन्द्रादिः यन

महामहामा वधमा लिनेषा सुप्रय महामा

उत्तमं परमात्मा इन्द्रमुमु

मिदलेम उभुगभा सुपभा नापमविमि

उमेमो

मीडिलभापपुयेपुडपभा

भात्रभा उभात्रभा

एनभा

पलेकगमउ

नपगनयेः॥१॥ हनविह्न

इउ उरुममु सुडा निठगरदवने लिनिभुडि

उपुडुउपुमुविह्निउदि

योममु

पंगुक्रम

भिलवने

येपा रभाना

कु

यः॥ यडु उडुमुडेयेगीम

येगीम

मलेपुमकसुनः॥३॥ म

उरुवभा भिडभा विमि

रमपुग रमिपुग

हडिइदराभीननपुमु

मल्लमुमठने एडिदेवभा

उरुवभा विमि

हुडेभा मल्लदभा विमि

मुपुठरुप॥ मापुधधिर



प्रायेयमा विमि कृत्वा वदामहे सर्वे

प्रायेयमनवदुविमिष्टुते ७

येनी मिलि कोषाव पगमाङ्गमा पल्लव

येगीयस्त्रीडनडननडन

देव किं ड कमेया गतिमतिउत्तुड सुद्धममे

मिष्टुडः एककीयडुमि

एवने न

डुडु निगमीग्यनिगुदः ०

अमेभा ममभा विमि हिदेड किं ड सर्वे

मुग्गेमेष्टुडिधूपुमिमा

मुमनपत्रे

रसमापेउत्तुडे रसमापेयडा

मननडनः नडुमिडनडि

पदेवभू भगणि न महुवषरन ममे

रीरंयेलाइनडुमिडुं ००



उषे मभ विनि गति भटि उरु कोडा किडा  
गति भटि उरु

उडेक गं नः दड्ड य उमिडे

उरु यर दड्डि का भि भुमे हि देवा किडा सुभनभा विनि

द्वियारियः उपविमृभने

भिलेणि पिंगभा उरु कि मुए प्रकु

यस्य द्येगा भड्ड विमृमुये ०३

हरात मरीर मरुड करि भुमे एरवेने सल्लाणि भुमे

भनंक यमिगी वंणयव

गति भटि प्रकुवेने नमिदने मग

यलं चिरं मंप्रकृता भिक

भनेनेति मडि प्रकुवेनेन

गंभुं मिमस्र नवल कय ॥

मभुमडि मत्रः करल भुमे रगे गति मुठयम

०३ ॥ यमत्रुड्ड विगड कीव

वक्रगणे

श्री  
ठगी

०५



भस्त्रेभा वृत्तभा विमि रेमं भुड

उत्तर रतेडा किडा

द्वयगण वृत्तमुत्तः॥२॥ भनः

भिविमि उत्तर भुड

योगभुड भुमिभिविल लगेभुड

भयभुम सिद्धियुक्तुभी

भिनवैनेडि दभिम

उभयः॥०२॥ यस्तुव्वेभ

भगभाभुम

भुनेडके छियकेन न उत्तर भुड

राहुनंयोगीनियतभनमः॥

माह्नम

भुज

मगनुं निवृत्तपभंभुड

भिविमि सुभवत्त भुवनके

योग

भुमभिम सुत्ति॥०५॥ नष्ट

केरुडि

उभापेपिवनेभा

रुडिकेनेभा

मत्तभुयोगीभुनमेकभुन

१२५  
नमि नमः ॥ नमि नमः ॥ नमि नमः ॥ नमि नमः ॥

नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

श्री  
गंगा  
००



कमन निमि योगभु येन पन क गपलेडिलि

कनेहियकु डडुपुडडु ०३

येष गने लवभु सङ्गल भभपना हनेमेये

यषापीपेनिवाडभुनेडडे

देसग वापडेण येगे गपिभडिड डभभुमे

मेपभाभुडः येगिनेयड

भिलवने येगभा पभाभुमा विमि

गिडुभियडुडेयगगडु

यडि गदना हने उडु

नेः॥००॥ यडपाभडगिडु

गनेभडे येगहभ निमि यडिडि

निमभुंयेगभेवया य

उचमड उडुभा डकुवने पभाभुमा विमि

इमेवडाडुनेपमवडु



121  
प्रमल(हे) भाषा(नमस्ते) पति

उधृति॥३॥भापनद्विकं

वृत्तमभु १८३॥७॥द्वियेनिमिमेभुडे

यडुमुमुगृहणडीद्वियं॥

एनन(हे) यति चति तहेपाहनीरेरुभुडे

वेडियइनयेवयंभुडसु

भिवन(हे) पतिदिमि

पेव हनभा

लडिडडुडः॥३०॥यंलवृ

नहेडा किडा डि ठियलल भनन(हे)रु

रापगंलकंनटुडेनगणिकं

गोडवनिमि

पषा हनभा

विमि १८३॥३॥रुःम

उडः॥यभिमुमुडेनमःपे

मडेकति

महुलाभभ

एन

हेन

नगुम॥७॥पिविरानुडे॥३३

मी  
रगी  
७१



३५। एतेणि वः पभा मते निमि मते विगद ममु

डेविष्टमृपमंयगाव्ये

येगहभा

नमो

मेय विम्व

गंयैगमस्तिउग मरिस्त

यमते

मिलनेगदियेग

पुहममभि

येनयेउवेयैगीनिविस्त्रे

उचमते

महल्लेनिमि

उपएभउ

उमः॥३३॥मकुलपूठव

कमनाइवेडा

किडा

मगेया

सुपरे

कंभंभुडाभवनेमेपउः॥

उचमते

अत्रियन(कहेम)

ममैदभा

भनमैवेदियग्रभंविनय

उपेडा किडा सुपरे

३५ ३५

भुमनउउः॥३४॥मज्ञैमवै



पारि वसुभते पैमडेगुमुस

मपग्नेसुमुपाडिगदीड

सुद्धभा विमि उमकेडा किड

या॥ सुद्धमंभुभनःवडन

किड(डिनमि) डाकगणि

किडिगपिमिडुयेड॥३५॥

वडे पडे गडनहे उमु मडल

येडेयेडेविमगडिनमस

मरि

उडे उडे गडेडकिड

सुलमभिरुग॥ उडमुडेमि

वडम सुद्धभा विमि सुयडेहणि

यष्टेउरुउष्टेववमंनयेड॥

माहूमडिउहमडे मभभा पकेपठ

३०॥ पूषडुगनमंहेनयेगि

म्री  
मगी  
०३



येतीसुभाद्वेभा भाषा मरे जिमेवेवनाकु

नेभापगुडुमन उयेडि

दोगेभडि र्लेगुममुभा पंगुक्रमभुलेभडेभा

मातुरमवदुमुकुडनक

पापगमुभा

भिलि

दभिमभाभाद्वभा

लुपम ३१ यस्तवेवम

हनी

गदिभडिउमुभडेभा

मुपमडे

राडुनेयगीविगाडकलु

भापमडे

वक्रमदेभा

भिलेभा

यः भापेरवदुमंयमम

नभाभेभा

गळनाकु

भगिनया

टुडुभापममुडे ३३ मव

कुडनाविमि

रकुवने

हुरमभि

पुडुममु

कुडमुनाडुनेमवकुडानि

मुभवने

हुरमभि

पुडुममु

भाभाद्वमरेभा

कुडाडि

सुद्धमा विमि पुरुवो सुद्धमसि सुद्धमसि

मउने ॥ गंउयेगयकुडु ॥  
सुधारे ठगठग ठगठग

भवउमगरमेवः ॥३७॥

यमे मि पुरुवो सुधारे भोय विमि

येमंयमुडिभवउमवंग

पुरुवो

उभापमयभा उ रंगकन

मययमुडि ॥ उमुदंनपु

कुमेव

मेडि

मि विमि

रंगकन कुदंन

नमुमिमममेवपुनमुडि ॥

भारिउया

कुडना

विमि सुभवने

येमे मि

३० ॥ भवकुडामिउंयेमंठ

मेवना

यकेमनेभा

ठवम (रंगकन)

सुधारे

एडेकइनामुउः ॥ भवषा

श्री  
ठगी  
७७



प्रभवनेति मेलुनी भिविनिहे

वकुमनिधिमयिगीनयव

पननिदेयमडे

सुधगे

रुडे॥३०॥पुडुपनेमव

कगग

रकना के येमे

भापडि

उमगं पमुडियेस्तन॥मु

यउनेया

दःप

मेया हरी

म

पंवयमिवापुपंमयेगी

हरी

नवा

पामेमडः॥३३॥सस्तनव

येमे येमे

मि

रपेव

सुगमडे

म॥येयंयेगभूयापेकुभा

नगर

ममेम

कु

भुनमपुमरन॥पडभुदं

ॐ कृत्वा कृत्वा न मङ्गलानि निमि भुम्भु

वपस्यमिमसुलङ्गडुडि  
मङ्गल पालेथो उरु

भुम्भु ॥ ३३ ॥ मङ्गलं दिनः  
मङ्गल भवने तलमभु मङ्गल

वपस्यमिमसुलङ्गडुडि  
मङ्गल उरु मङ्गल उरु मङ्गल उरु मङ्गल उरु

उमृदं विगुदं नष्टे वयो  
मङ्गल मङ्गल

वपस्यमिमसुलङ्गडुडि ॥ ३३ ॥ मङ्गल  
मङ्गल मङ्गल

वपस्यमिमसुलङ्गडुडि ॥ ३३ ॥ मङ्गल  
मङ्गल मङ्गल

वपस्यमिमसुलङ्गडुडि ॥ ३३ ॥ मङ्गल  
मङ्गल मङ्गल

श्री  
मङ्गी  
१०



महामतेति

देवतत्

वैरगमतेति

महामेनउकेडेयवैरग

गणकु

गण उग्रयमेयै यग

मगदडे॥३५॥ममंयडा

दःपे भवनं येष

मृदु ब्रह्म

अयेगिसुधूपडडिमेम

गणिमडि उग्रमेमुमा

यद्वा गवनेमा

डिः॥वमृअउयडडम

दिकेणि भवनमा

किडेउययभाविमि

देषधुमपयडः॥३६॥म

ममं गेमते

मृदु ममु

लुगवग॥मयडिसुधूप

योगभा निमि

मलिमडिउग्रममु

गवने

येडेयोगसुलिउगनमः॥

139  
अथ यो गं भं नि सिं कं ग

डिं वं श्रु गं मुडि ॥ ३१ ॥ कं सि

नेठ य विरू धु मित्र रू ग व न मु

डि ॥ अथ डि धु म द रं दे वि ग

खि वू द मः प वि ॥ ३३ ॥ ए डे

भं म य व श्रु मु उ म द भि मे

ष ३ ॥ इ य टः भं म गृ भु मु

श्री  
ग्री  
१०



माना गुण रप ए भठ लायक है

॥ उनरुप पसुड ॥ ३७ ॥ ग

वपवम ॥ यउने वेदनम

परलेकभु नाम एननमभुभा है दप ए भठ

इविनमभुभुविमड ॥ न

कम कवने कम इलेमलि

दिकलप वडे सिमन

पमलन गकन है यवभा निमि एवेडा किडा ॥ ४८ ॥

डिंडुगसुडि ॥ २ ॥ ययुय

यव कवने डि यगी सुहि भडि यमनभु लैक

एवडं लक न धिदमा

उमेडा किडा रुनि ना वेदन कडिना मेठवनिन

मुडीः ममः ॥ मुगीने मीन

मन्त्रधनं दक्षिणं मन्त्रं विमिश्रितं निमित्तमेव  
पिम्पु ३५ एनं  
ॐ गेदेयेगकृष्णैर्ये ॥

येनीयकृष्णं ३५ एनं वसुभूमिना  
१०॥ सषवयैगिननेवकु  
कृष्णं कुलमाविमि गय (पल्लव)

लठवाडिगीमडं ॥ पडसि  
मयैकृष्णं एनं लैकमा विमि मयैकनि

मलठडंगलिके ॥ अयमी  
मषादेव ३३ मे एना ३ नेलेमा

श्री  
ठगी  
१३

ममन ॥ १३॥ उडुडवसिभं  
लठना ३५ एनं मगी

धैगंलठडुधैचमेदिक  
उवनिमि ठियाडि यवकृष्णं

॥ यडडेगडडकृयः ॥



भिक्षुविमि

५

भंडमि

भिक्षुः कुननश्च ॥ २३ ॥ प्रव

महामभडे

भिक्षुने कनकु पले भो विपेभा सुयडे

हभेनडे नैवद्वियडे छवमि

सुभवेनेडि

सनना छवनेडि पंगभा

धिमन ॥ रिद्धमगधिये

पंगवृद्धभा प्रवेनेकु

गभुमचवृद्धाडिवकुडे ॥ २४ ॥

यडभा निमि यड कवनेडि मेगी

प्रयड मृडन नभुयेगीने

मृडभडि पापे मभु

मभभु रागे मडे

सुसुकिविषः ॥ मनेक

भिक्षुनभुलेभडे उवने मगळनकु

मकु

मभमिभिक्षुमुडयाडिपांग

गाडि ॥ २५ ॥

मन्त्रधुना दन्तिना मन्त्रा विमिषेगम विमिषेमेडा  
उंगेदेयेगकृषूठिएयेडे

येमीयकृषू ३५एनकृषू वसुमन्त्रिना  
२०॥ सुषव योगिननेवतु  
कृषूभा कुलमाविमि गय पलेभा

लठवाडिगीमडं॥ पडसि  
मथेदुद्धर एम लेकमा विमि मेवकनि

मृलठडंगलिके अयमी  
गषादेव उडि मे एनाड नेलेमा

मृमन॥ १३॥ उडउवसिभं  
लठनाकृषू पडेमेमगीम

घेगंलठनेधेचयेदिक  
उवनिमि ठियाडि यवकगनकृषू

॥ यडेउमडउकृषूयःमं

मी  
ठगी  
१३



ਪੰਤਮੇ

पहामभउ

मिडिनेकनकु पले पाठ डिपेभा सुयते

सुभवेनैडि

एतन्निष्कृवनेति पैगभा

ਪੰਚਕਮਾ ਪ੍ਰਵੇਨੇ

यद्गमा निमि यद्ग कवनेति घेनी

ਸ਼ੁਕ੍ਰਿ ਮਤਿ ਧਾਧੇ ਮਧੁ

मभापुं रात्रे मते

मिहमभलेभउ उयनमगळनवि

३३

गाडिं ॥२५॥

मन्त्रधनं दक्षिणं मन्त्राविमियोगमविमिवसेत  
पिम्पु उधएन  
उंगेदेयेगकृष्णेनियेउ

येगीयकृष्ण उधएनके वएभभुन  
२०॥ सुषवयोगिनमेवउ  
कृष्ण कुलभाविमि गय पलिपठ

लेठवाडिगीमउं॥ पडसि  
यथेकृष्ण एम लैकभा विमि पेंवकनि

मलठउंगलेके॥ अयमी  
गषादेव डडि मे एनाउ नेलेभा

श्री  
ठगी  
१९

ममन॥ २३॥ उउउवसिमं  
लठनाके पडेमेमगीन

येगंलठउयेवसेदक  
उवनिमि ठियाडि यवकगनके

२॥ यउउगउउकृयःमं



भिक्षुविमि

५

भेडमि

भिक्षुजनवचन ॥ ५३ ॥ प्रव

महामते

भित्तिनेवनके पलेभा० विषेभा सुयडे

हमेवेडेवैवक्रियडेह्वमि

सुभवेनेडि

सनन ॥ ह्ववेनेडि पेमभा

धिमन ॥ विह्वमगधिये

पांवूकभा प्रवेनेके

गभुमचवृद्धाडिवडुडे ॥ ५४ ॥

यडभा निमि यड कवनेडि मेगी

प्रयड मृडनानभुयेगीमं

मृभुमि पापे भुमे

मभापु रात्रे मडे

सुसुकिविषः ॥ मनेक

भिक्षुमभेलेभडे उवनेमगळनके

उडा

मममिभिक्षुमुडयाडियगं

गाडि ॥ ५५ ॥



उपभुयन्त्र निमि सगे यैगी हनेभा निमिति

उपभुयन्त्रिके यैगी हने

सगे

भावेभुते

कगेभुते

हृथभतेरिक्ः कप्रहृष्ट

निमिति

सगे

हने

भंभण

ठिके यैगी उभृष्टेगी ठव

दे

यैगी यना डि

भागिना

सुन २० यैगिन भुधम

भिविमिगेभुते

सवु कग मते

वैषंभभुतेन भुगभुव

सुहभभु

मेवना कु

यमे भि

भेभि

सुहवभुतेन भुगभुव

हनेभभु

भुनेभा

यउउगेभतेः २१ जउमी

स्री  
ग्री  
१३



ॐ गवक्षीडभुपनिषद्

वृद्धविष्टये योगमाभु

मीढास्तु नुमं वरेषु

भट्टभयेगेन भाषुषेष्ट

यः ॥ ॐ गवक्षीवरा ॥ भयु

गिभति उद्धमभु दे योगभा भिलवने

भक्तभनय उयेगयुक्त

भित्तवने भक्तदरभु

अरुमयः ॥ यमंमयंम





प्रेषणं

कृत्वा

भाते सुग

उद्धतः ॥ ३ ॥ कृमिगर्भेन

कृमि मुकम् उद्धतं वृद्धति

कथः पंभने वृद्धिरेवम् ॥

मदङ्कग पदैर्भा भाते विवे विवे ५२३

मदङ्कग ५३ अयं मे विवपुव

मविपुव

विद्या

पदैर्भा

प्रेमनि

डिधुग ॥ ५ ॥ मयरेयमिडु

विद्या

पुद्ध

खनम्

भाते

यत्

टं पुद्धतिं विमि मेपगम् ॥

लीव

मय पुद्ध

दे

यवमे

लीवकुटं मदरुद्धययम्

पुद्ध

पुद्ध

एग

ममेमि

उद्धमम्

पुद्धेगम् ॥ ५ ॥ पुद्धिनीनि





अदभा षं कग भागिना वेदभा विमि

अदयेः पुं कः मववेयी

मन्त्रा उकभा विमि भुवकग गल पविश

धमवुः पेपेन धनय ॥ ३ ॥

कुडा सुविमि भगल्लग कुभा कु डेरा

पटगनुः पाषि वं गडे

अदभा विमि लीवा भागिना

सगभि वठवमे ली वनं

कुडना विमि उभा कुभा कुः उपमीयना विमि

वकुउपुउपसगभिउपमि

हले मि भागिना कुडना दरे

ष ॥ ७ ॥ गीलं मं भवकुडनं

एनाय दे पूर वडा वद्विवाना

विमिपउमनउनम वसि

दल्ल

१५१  
हैमा रु

डेरु डेरु

बुद्धि नटना भिड्डु मुल्ल

वपन

दरे रु

रला रलमभिन

शिव भदन ॥०॥ उलंठल

दरे

रु

कभगगमु

वडंरदंक गगगाविवलि

पमभु

उलंविमि

कभटेवा

उं ॥ उम विन सु डे वरुने

हैमा रु

दे

वेम डि

भिठगडवठ ॥०॥ येरोवम

भुगुल्लके

गुल्लके उमगुल्लके

डिकठवरग मभुमभ

यग

भिनमिडि

यष लकभा डेभाएन

स्वये गडा वेडिड विवि

श्री  
रुगी  
१०



नडि हुडेभनविमि डेभा भिविमि शिया भडे

नडुदं डेधुडे नायि ॥०३॥ डि

भडिगुल्लु डेलिगुल्लु डमेगुल्लु डेठवमडे लभेभगेया

ठिनुल्लु भयेठुवैगेठिःभ

वेदा एग मडमभु  
वाभिरंल्लु गड ॥ गेदिडा

एगन(हेन भुमभा डणभन(गुल्लु न(निमि  
किरणडिमनेठुःपगन

मो नमभु नीरुवट्टु पले पाठे

वृयभ ॥०३॥ रेवीहेपगु

लडवा डिगुल्लु मरु भुट्टु भया नडःपे

भयीभनभयागुड

उल्लुने भिये येभा मगल्लु मभएन

यभनेवयेधूपडुडेना

भाययिन्ममेभा उगन क्रे डेभा

यमेउंउरुडिउं॥०॥॥

मि भये अत्ता मग्न मभएना

मधुडिनेमः पूयष्टुड

कु मप येम रोगेभडि ह

गठमः॥मयययष्ट

मममे मभममेभा वव पूवना कु

हनापुमगंठवममिडः॥

येया अकति मेववहि मि

०५॥सडचिणमःपुमः॥

नेका ममममे दे सुएणा

नःभुवडिनेलन॥पुवुहि

सननभा उकुवने मडलभा ममवने सुमीडि

हमगडडीहमीराठगड

श्री  
मगी  
११



दे उमोमद्वरुहरी  
ॐ॥००॥ उयं हनी निह

मगिगममु मऊया ठल्लु भमु मरेकु

यउाकठडिविमिधुउ॥

प्रववेन येकनि हनीमरे पभाभेकु

धुर्येदिहनिनेहउमदं

मेतिमि

लेलेद

ठने

मममभाधुयः॥०॥ उमगः

मगेयाति

मभा

हनीति

पनया

भुने

मवाप्वैडेहनीइडेवने

भानेभा

मदवने

मे

योकरि

मउं॥ उमिउःमदियउ

येगममु

उऊममु

भुने

गउ

अममेवनुनंगडि॥०॥

मऊ

समधिना एतना नममा विमि हुनभुं

उदुनैरुमनभुंउदुनव

मि नेमैयैवना के नगय

मैपुपुष्टेउ वभुमेवः

भोगेय जेमे उरिमुकुमु सभापैरुः

भवमिडिमगदडुम

पेलठने कभनभुं उके उके

फलठः॥००॥कभैमुमुद

रुगिगेभडि निमिगळुन के छियनना केवडा सहा

उल्लनःपुपुष्टेउटमेवडः॥

मैमै नियभा गेडा किडा मुठवभडे

उउंनियमगभुयपुव

गदभडे भननि यमै यमै

उगनियडःशुवः॥३॥यैयै

स्री  
ठगी  
१३



यभा यभा मगीरभा ठुं ठुं मउ प्रए

यंयंउंठुःसुसुयशि

क१०० भाकिउं उठ्ठा कु उभा उभा प१११भा

उमिसुमि उमुउमुय

सुसुयान ठुं मयि उमेववि

लं सुसु उमेवविश

मेमभाकु

म१११भा उमिठुं मउ

भुदम ३० मउयामु

उभा प१११भा प्रए कठ्ठा कु मउ

ययउमुमुगणनीजउ

भुवना कुडि उवनिमि कभना

लठुंयउउःकभम

मिये क१०० उं लोकनिउंभा

यैवविदउदिउन ३३





मो १ ५ गुमववने भामेभा

मम ३२ नदं प्रकमः न

यूगेयिभायवभडे

वलनसुभडे

वेभृयगभयभमावुडः॥

भत्वा

पेकया

एनन

केर सगेयभैलका

अरुयनठिरडिलिका

भानेगिनभु

नामभु

ए३

मभृयग ३५ वेम

५

गेभडे

मभृएवनेडि

दंभभडीडानिवडुभम

डे

मभृएना

कु

निराशुन ॥ ठविष्टा

५

कुश

मिडिदरि

केदा १

कुडानिभंउवेसनक

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

नमो भगवते

दे

भगवते वासुदेवाय

नमो भगवते

नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

भगवते

वासुदेवाय

ॐ

दे

नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

नमो भगवते

वासुदेवाय

ॐ

दे

नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

नमो भगवते

वासुदेवाय

ॐ

दे

नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

नमो भगवते

वासुदेवाय

ॐ

दे

नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

नमो भगवते

वासुदेवाय

ॐ

दे

नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

श्री  
ठगी  
३-



मकलवने प्रहे मि गेटा किता यत्रा कगन हियेम

मेकायमामसुटयडडिउ॥

उमा वृक्षमभा उमा एगमा सुप्रपलनन

उवृक्षमसिमः वसुनापुडु

कमा

भागेया

घरि

कुडाडि

केमरागपिलम॥३७॥मठि

मठि है वडि मि घटियपूडि उम

कुडाठिरेवंनामगठियहं

एगना कु

मामममयमा विमिति

येयेविमुः॥पूयकले

मि

उम

येगम

मि

उममठिरे

धिसमंतेविमुदुउगड

मः॥३॥उडिमीठगवझी

सुखं नमो निमि उपलभते सुखे दधि

सुखं नमो निमि उपलभते सुखे दधि

सुखं नमो

दे

भोग्या कृत्वा

सुखं नमो

देवताः भवकुतः निमं

भोग्या

गच्छता

कु

दे

भेदं नमो यथा उपलभते ३१

ये भोग्या

नि नमो

गच्छता

नि कृत्वा

येषां उपलभते यथा उपलभते

पवित्रा

कर्मभोग्या

उपलभते

पट्टकम् उपलभते

सुखं नमो

निमि

उपलभते

सुखं नमो

दनिमः उपलभते

सुखं नमो

उपलभते

श्री  
ठगी  
३०

रुद्रः ३३ उपलभते



मकलवने प्रहे मि गेटा किता यत्रा कगना हियेभ

भिकयभममसुहयडडिउ॥

उभा वृक्षभा उभा एकाभा उत्रपलनना

उरुद्रुद्रिसुःवसुभपुडु

कभा

भागेया

परि

कुडाडि

कभरापिलम॥३७॥भाठि

मरिहैवाडि मि यठियलूडि उभ

कुडाठिहैवंभाभठियलू

एना कु

भागलमभयभा विमिति

सयेविमुः॥पूयलूकले

मि

उभ

योगम मि

उरुभसित

धिसमंउविमुदुउरुउ

मः॥३॥उडिमीठगवझी

उभयपनिषद्भूतवृद्धवै  
यगमभुमीनक्षत्रमभं  
मेहनविहनयेगिनभभपु  
भैष्टयः॥१॥ यस्तनुवरा ॥  
किंउभूद्वकिंनष्टुकिंक  
पनपडन॥ यस्तिकुंउयकिंयु  
उंयगिरेवकिंनष्टु॥०॥

श्री  
रुगी  
३०



160  
 गरियल्लकपेकेउरेदे  
 भिमप्रपुमन॥ पूय  
 कलेरकपेकेयेभिवि  
 यडाडिठिः॥०॥ ठगववव  
 स॥ म्दगेवृद्धागंभुठ  
 वेष्टुनसुते॥ कुठविम  
 वकगेविमजः कम्भंलि

३:३॥

॥ ५॥  
मृष्टि कुंठं कंठवः पुनव

मृष्टि कुंठं कंठवः पुनव

मेव इत्येते देवदहं वः ॥

॥ मृष्टि कुंठं कंठवः पुनव

मृष्टि कुंठं कंठवः पुनव

मृष्टि कुंठं कंठवः पुनव

मंमयः ॥ ५॥ यं यं वाधि

मा  
रुगी  
३३



भगवन्तं उक्ते कलेवां॥

उत्तमे वै उक्ते पुयभा उम्

वठविउः॥॥ उम् उम् चेष

कलेयुगममममग्यपुम्॥

अष्टदिउमनिवमिउमनेवै

पृष्ठमंमयः॥॥ सृष्टमयोग

यत्तुवरेउमवपुगाभवा॥

163

पगमं पनयं शिवं यत्तु  
 अत्र शिवयन ॥ ५ ॥ कविं पग  
 मन्वृत्तिमिदं मन्त्रं  
 मीयं मन्त्रमग्रेष्टः ॥ म  
 वमृत्तुगमशिवयनं  
 शिववन्दनमप्यगम  
 ३ ॥ ७ ॥ पूज्यं कलेमन

श्री  
 गी  
 ३३



64  
भयलेन कृष्ण उयेग  
लेन येव ॥ ह्वे भयेय  
भवेम भयेय कडंय  
नभभयेय उयेय ॥ ० ॥  
यय कंवेय विरेय उये  
विम उयेय उयेय वीउगः ॥  
यय कंवेय विरेय उये

उडपंमसुदे प्रवद्वे००॥  
भवसुगमंयभुनि  
हरिनिमृष्टप्रवृणयड  
२ःप्रमाभुडियेगण  
०३॥ उंभितेक  
गंमृष्टदगमभुम  
गने॥ यःप्रयडिउरेदं॥

स्री  
गगी  
३५



मयाडिपगंगडिन॥०३॥

मनटरोडःभडउंयेनंभ

गडिनिहमः॥उभृदंभल

ठायडनिहयडभृयोगि

नेः॥०५॥भभयेडभृर

अभृपलयभमभृउं॥०६॥

धवडिभदभृनःभंभ

सिंभगगडः॥५॥  
 द्रुवनल्लिकः॥पनगवडि  
 नेलन॥भभयेड्डकेने  
 य॥पत्रलअनविष्टे॥१०॥  
 भदभयगपदुंभद  
 सुदभ॥विमः॥गड्यग  
 भदसं॥उडेगडिक्कि

श्री  
 ठगी  
 ३५



५६८  
५३:॥०१॥मवृडासुड

यःभवः॥प्रवृद्धग

गने॥गृहगनेप्लीय

डेडेववृडमरुके॥०३॥

कडगुगामावयंकुड

कडप्लीयेडे॥गृहग

मेवमः॥पाउप्रवृद्ध

169

गगने ॥०७॥ यममुद्राकुल

वेदेष्टुतेष्टुताङ्गुतः ॥

यः भवति पुरुषः

इति विनम्रम् ॥ ३ ॥ सर्वम्

काठंडुडुगडुपामं

गडिं॥ येंधू॥ ननिवडुते॥

उसू भयानं गम ॥ ३० ॥

३

८गी

30



प्रमथः मथः पाउठु

लष्टभूनटया ॥ यभृउः

भुनिकुउनि येन भवभिरं

उउम ॥ ३३ ॥ यइकले

उनवडिमवडिमैवषेगि

नः ॥ प्रयाउयाडिउंकलं ॥

वहुभिठगउद ॥ ३३ ॥

मयिहृतिगदः मुक्तः यम्

भउउगयम् ॥ उउप्रया

उगमुडिबुद्वुद्वुकिमि

एनः ॥ ३२ ॥ पुमैगडिमुषा

कलः यम् मारुदि ॥

यनं ॥ उउगमुममंदि ॥ ३३ ॥

दिगीप्रापुनिवउउ ॥ ३४ ॥

श्री  
गगी  
३१



मुक्तदशगडीहोउरग

उःमसुउमेउ॥ एकयाय

इनकाडिमठयवउउपनः॥

३० नैउमडीपउएनटिंगी

महाडिकसन॥ उमडुवे

धकलेषयैगायकुळवा

लुग॥ ३१॥ वेरेषयल्लुष

उपभुञ्जेवरुनेषयइष्टद

लंपूरिषुं॥ मृष्टेडिउडुवमि

रंविमिइयैगीपगंभुनभ

थेडिगमृभ॥३३॥ जडिमी

कगवझीडमुपनिषडुवम

विष्टयंयैगमभेमीवक्ष

लनमंवरेभदपनयवि

मी  
कगी  
३३



गिनमधूनेष्टयः॥८॥

वक्वक्व॥५॥उंउउगुह

उमं॥प्रवहृष्टमयवे॥

ह्मनंविह्ननमादिउंयह्म

इमिहृमेमुठउ॥०॥गह्म

विहृगह्मगुहं॥पविउमि

रुमउमम॥५॥हृहृवग

175  
मंण्डंभुभापंककुभव्यं३॥

समसुणनःपमयण्ड

मृमृयगुप॥सपूयुमं

निवडुडेभडुमंभगवडुनि

॥३॥भयउडभिरुंभचं॥

गमवृडुभुडिन॥भभुगन

भवकुडानिनगदंउधुवडु

श्री  
वर्गी  
३७



उः॥२॥ नगभङ्गुनिकुडानि॥

मृनेयिगनेसुगंभ॥ कुडरु

नगकुडमुगभङ्गुकुडठव

नः॥५॥ यषकमभिउनिहं॥

वायभुवउगिमपन॥ उष

भवा॥ कुडनिगङ्गुनीड्य

णय॥७॥ भवकुडानिकेउ

यप्रलडिंय विभाभकी॥

कल्पयेपनमुनिकल्पये

कमरमुदग॥१॥ प्रलडिं

मुभवपूहविमरभिपनः

पनः॥ कुडग्नभिभंनड्डुम

वमुंप्रलडेवमाड॥३॥ यरभं

अनिकमलि विरप्रडिणव

श्री  
रुगी  
७.



स्य ॥ उरुभीनवरुभीनम

उंउषकभम ॥ ७ ॥ नयपृक्षे

पुदाउः मयउमरागम ॥ दे

उननेनकेपुय ॥ गापुपरिवु

उ ॥ ० ॥ मवएनडिनें मुरु ॥

मनुषीउनममिउन ॥ यां

ठवनएनउंनमकुउनदेम

॥ ०० ॥

मिथाममिथकम् मिथ  
 लविगेडमः ॥ गङ्गाभीगभुंगी  
 येवप्रवडिंनोदिनीमिउः ॥ ०३ ॥  
 भदाङ्गनमुनं पउरेवोप  
 वडिगमिउः ॥ ४९ ॥ वृत्तम  
 नमिहृदकृडागिभवृयन ॥ ०३ ॥  
 भउउंकीउयउंनं यउउसु

श्री  
 ७०  
 ७०



७८०  
खवडाः नमस्तुभ्यं नमः

निष्ठयता उपमते ॥ ० ॥ ॥

नयस्तेन राष्ट्रेयस्तेन

पामते ॥ एकैरेन पञ्चकैः

वदन्त विमुक्तिमाप्नुयुः ॥ ० ॥ ॥

सदंरुद्रदंयः सुण्ड

भदने यथा भद्रेभ्यः

नवद्वन्द्वमदनागिरदं  
 ॥०॥ धिउदनमृगडिभउ  
 उडनपिउमदः वेष्टपावि  
 इमिङ्कगुक्ताभयसुगेवम॥  
 ०१॥ गाडिउडपूडः मक्षीनि  
 वमः मरुभुदुड॥ पूठ  
 वः पूलयभुनंनिणनंरी

श्री  
 कर्गी  
 ७३





182

ॐ नमो भगवते ॥०३॥ उपाभुद  
 मंदवदं निगदुदुदुमि  
 ग॥ नमो उंयेव नदुसुमर  
 मसुदमलुन॥०७॥ इवि  
 मृमं मेनयः पुडययः  
 यल्ले गिधुभुजडिपुडय  
 उ॥ उयटमममममम





उपनिषदियुक्तं विग

केनैवदभु ॥३३॥ येष्ट

येष्टभुक्तयस्तेसुसुय

विदः॥ उपनिषदेवकेष्टुय॥

यस्तेष्टुविष्टुचकन॥३३॥

यदंदिभवयस्तनंकेष्टु

यष्टुवेवस॥ ननुनानि

एनाडिउडनाडसुवडिउ॥३२॥  
 याडिउरेववूडरेवापिडू  
 ठाडिपिडूवूडः॥कुडागिया  
 डिऊडेह्यगडिममृरि  
 वेपिमम॥३५॥यइपुपं  
 दलंउयंयेमेठहूपय  
 मृडि॥उरदंठहूपहउ

श्री  
 गंगा  
 ७५



१५६  
मन्त्राभिपूयताङ्गः॥३०॥

यङ्गिधियरमाभियङ्ग

दिधियरमाभियङ्ग॥यङ्ग

यष्टाभिकेडेयङ्गुमधुम

रुद्रम॥३१॥सुठसुठ

लैगैवंभिट्टमेकमरुतेः॥

मन्त्रमयिगयङ्गुङ्गविग

कुमानयेष्टमि॥३३॥ मने

दंभवकुडवननेसेष्टमि

प्रियः॥ येठ॥ डिडनेठड्ड॥

मयिडेडेवराधुदन॥३७॥

माधिरुड्डगगगठडे

मामनटठक॥ मप्रगेव

मगडुवः मगुगुवभिडिदि

मः ३॥

श्री  
रुगी  
७५





किं पनवुदम् ॥ ५८ ॥ ठडा

गद्वयमुषा ॥ मनिटम

भापलिकनिमंयुपुठम्

मुभाम ॥ ३३ ॥ ममनठव

मठडिमठरुमीमंनममु

म ॥ ममेवैष्टमियडैवम

इनेमद्वयम् ॥ ३२ ॥

श  
गो  
७०



ॐ डिमी ठगवस्त्री उग्रपति

पद्मविष्टयं योगमा

मुमीतल्लनभं वग्ने

विष्टगुह्येगेन

भनवनेष्टयः ॥ ठगवन्

वग्ने ॥ कृयावमदग्ने

मृगमेथगं वग्ने ॥ यडे

दंशीयन ॐ य व ह्रीं

दिउकभयः०॥नेनेवि

मःसुगमःपूठवेंनद

द्वयः ॥ सदा नानिदिरेव

वर्णमालाद्वयं यमवमः॥

३॥ यमगणेशनामस्तु॥

वेडिलिकभदसुरं॥५॥

ਸ੍ਰੀ  
ਠਗੀ  
੭੭



१५२  
अरुः मभट्टेपुमवपयैपु

ममृडे ॥ ३ ॥ वृद्धिल्लुनमं

मेदः कभमभट्टममनः ॥

भापंमः पंठवेठवेठयंरा

ठयनेवरा ॥ २ ॥ यदिमभम

उडुधिसुपिरुवेयमेयमः ॥

ठवडिठवकुडनं मडाव

५५॥ १९३  
पञ्चागिणः॥५॥ नदक्षयः

मधुपचेरुङ्गभनवमुषा॥

मधुवभनवभाएडयेधं

कं लिङ्गभः पूरः॥७॥ पङ्गवि

हुडिंयैगंरभनयिवेडुडू

३ः॥ मेविकछेनयेगेयष्ट

उराइभंमय॥१॥ स्रदंभव

श्री  
गंगा  
०३



मृष्टवेमः मचंप्रवडुडे॥

उडिमडुठुने वणठ

वमगडिडः॥५॥ मसिडुग

मडपुठुठुवडुः पगम

गग॥ कषयडुसुनं निडुड

अडिगगडिग॥७॥ डेयंम

उडयडुनं॥८॥ डुप्रीडिड

वकन॥ सग्निवस्रियगं॥

चनगपयति॥०॥३

धनेवनकं॥३॥३

उवः॥३॥३

मुहनीपेन॥३॥३

ज्ञानवश॥३॥३

पवित्रं॥३॥३

श्री

गंगा

७७



समुद्रं सिद्धं नगरं मेव नरं

विष्णु ॥०३॥ सुदुर्गु नयः

भवेत्तेवदिनं गुरुभुषा नमि

उत्तेवलिष्टमः सुयं मेव वृषी

धिने ॥०३॥ भवमेतमुत्तमं

यमं वरुभिकेमव ॥ वदिउ

रुगववृत्तिं विमृष्टव नरं

वः ॥०२॥

197  
अथ मेव अज्ञाने वेदं पुरु

धेउमकुउठवनकुउमयवर

वरगइउ॥०५॥ वकुमदभुमे

य॥ मिवाठअविकुउयः॥ य

ठिविकुउठिकेक॥ निमंभुष्ट

थडिपूभि॥००॥ कषंविष्टम

दंयगिंभुंभरपगिशिउय

॥॥

श्री  
रुगी  
०...



केषु केषु गणवेषु शिष्टेभिः

गवाम् यः ॥ ०१ ॥ विभुः ॥ ३३ ॥

नेयं गं विदुः डिं रं ननु ॥

कृयः कषयश्चिदि म

वृत्तं ननु मे ननु ॥ ०५ ॥

गवाम् नवः ॥ दत्तेक

वधिष्टानि शिष्टेभ्यः

129  
कूडयः॥ पूण्डुड कुनसे

धूरभूड विभुभूने॥००॥

सदनाडुगुड केमम

चकूडमयसिडः॥ सदना

सिच्चनष्टंरकूडनगडा

वेग॥३॥ सुसिडनगदं

विष्कूलिडिधनगदनेमुभा

न॥

श्री  
कगी  
००



भगीशिनडभमिनक

इ०००भदंसमी॥३०॥वरा

वंभभवेरिमिरेववम

मिवभवः॥३॥मिया००

भनस्रमिडुडवगमि

गडन॥३३॥मस्र००मक

गगमिविडेमेयकगकम

न॥

वसुनं पवकस्तमिनेन

त्रिपरिणमदा ॥ ३३ ॥ ५

गोभारभाष्टनं विप्रियुतु

वदन्प्रतिन ॥ भीमवीरन

दंकरभारभानमिमग

॥ ३२ ॥ मददी ॥ उक्तुग

दंशिरभभुकमदग ॥

श्री  
ठगा  
०३



यह्मनं एययस्मिभु

वगंदिगलयः॥३५॥

मसुतःभववकंमेव

दींमवगः॥गव

ंमिडुषःमिसुनक

धिलिगनिः॥३७॥उहैःम

वसुमसुनंविहिगम

५०३  
मडिमुवन॥ गवडंग

लेमुनंनग॥ उरनग

पियन॥ ३१॥ सुयुठनन

दंव॥ पेनुवनभिकनप

क॥ पु॥ नस्रभिकनप

मद्य॥ मभिवभकिः३३

॥ मवउस्रभिवगानंवन

श्री  
ठगी

००३



२०५

॥ यत्तुमाभदने ॥ पितृ  
॥ मत्तुमाभदने ॥ मयममं  
यत्तुमाभदने ॥ ३० ॥ ५६  
रत्तुमाभदने ॥ कलः क  
लयत्तुमाभदने ॥ २० ॥  
रत्तुमाभदने ॥ ३० ॥ ५६  
॥ ३० ॥ ५६

२०५  
अभिगममभुडभदे॥

ग्याल्लभकरसुभिभुड

भभभिद्रवी॥३०॥भज

भभभिद्रवी॥३०॥भज

भभभिद्रवी॥३०॥भज

भभभिद्रवी॥३०॥भज

३३॥भभभिद्रवी॥३०॥भज

श्री  
मगी  
००५



सुसुः भग्नमिक सुसु ॥ न  
दं गेव दयः कलिण्डं  
विमुडिनापः ॥ ३३ ॥ सुदुम  
वदगसुदं गमुवसुठवि  
धुडं ॥ कीडिः श्रीवज्रनगी  
॥ सुडिमेणपुडिः दमा ॥  
३२ ॥ वदङ्गुनडवाभायं ॥

गायत्रीमन्त्रमभ्युदयं ॥ न  
 भवन्मन्त्रमभ्युदयमभ्युदयं  
 जगन्मन्त्रः ॥ ३५ ॥ शुद्धं मूल  
 यत्तन्मन्त्रमभ्युदयमभ्युदयं  
 भवन्मन्त्रमभ्युदयमभ्युदयं  
 यत्तन्मन्त्रमभ्युदयमभ्युदयं ॥  
 ३० ॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

श्री  
 गंगा  
 ०-५



पांडववैष्णवश्रुतः॥ श्री  
रामधृष्टवृमः कवीनगुन  
कविः॥ ३१॥ उपरीनंगव  
सुमिष्टुनगमिकपु  
नम॥ भवभंगुल्लेखीनं॥  
रुष्टिदेपुनरुन॥ ३३॥  
रुष्टिरुमयडभिमिनी॥ ३३॥

२०९  
 भूमिर्गोपडं ॥ भेनं  
 वामिपुछनं ॥ छनं छनव  
 उमदन ॥ ३० ॥ यज्ञाधि  
 भवकुडनं ॥ गी ॥ उमदन  
 लन ॥ नउमभिविनयडु ॥  
 अयकुडं रागम ॥ २ ॥  
 नडुभिनमरिवनं विडु

श्री  
 कर्गी  
 ००७



७१०  
३०॥ पञ्चमः ॥ पञ्चमः

३॥ प्रोक्तं विष्णु उच्यते ॥

२०॥ यथा विष्णु उच्यते ॥

भस्मलिङ्गमेव ॥ उच्यते ॥

वगम्यन्तं भगवते ॥ मन्त्रः ॥

वन् ॥ २३॥ यथा विष्णु उच्यते ॥

न किं ह्येव उच्यते ॥ वि

२६१  
धृष्टदामिदं दम्भनेकं मन

मुत्तरेगाड ॥ १३ ॥ ७ डिठग

वझीउभुपनिषड्भुव्रभवि

सृयं यैगमभुश्रीदक्ष

नरभंवरु विहुडियेगी

रभरुमभेष्टयः ॥ ०० ॥

श्री  
ठगी  
००१



२१२  
सलत्रवस्य ॥ उँनरुग्ग

दयपग्मं सुहृन्पुत्रं

प्लुतम् ॥ यद्वयेकुवग्मं

नभेदेयं विगडिभम् ॥०॥

व्याधियोदि कुडनं मूडे

विभुग्मिभय ॥ डूडः कर्म

लपइदं नदं डूडपिण

वृयं॥पवेनेउरुषाऊरुंन

ऊनेपग्नेसुग॥सुषुभिमु

भिउउयनैसुगंनयैउम॥

७॥भट्टमेयगिउमुनेम

यारुषुभिडिपूठे॥यिगी

सुगउउनेकुंरुनयउम

वृयन॥२॥श्रीरुगववुव  
स॥

श्री  
रुगी

००३



५२५  
पमृनेपाउकुपा॥मउमे

षमदभूमः॥नवाविणवि

मिष्टानिनकुवलठठउनि

म॥५॥यमृमिष्टनुमृ

मृनमिरेभनउमुषा॥

मृनमृषुपवा॥यमृ

मृदनिठगउ॥०॥७५कं

एगङ्कचंपसुगिभारगारं॥

भनरेदेगुरुकेमयसुवृ

सूक्ष्मिच्छमि॥१॥ नडभं

मठभेसूक्ष्मवेनैवभरु

य॥ गिवृंरुभित्तुः॥

पष्टनेयिगनैसुगन॥३॥ म

सुयवर॥ एवगङ्कउउग

श्री  
रुगी



ॐ नमो योगेश्वरिः ॥ नमः

भयं तस्य परमं दुःखं नैव सुखं ॥ १ ॥

मनेकवदुःखं यत्र नैकं सुखं

जननं ॥ मनेकं शिवं कालं ॥

॥ शिवं नैकं सुखं यत्र नैकं ॥ ० ॥ शिवं

वृत्तं लभ्यते शिवं गच्छते

पतनं ॥ भवत्तदयं नैव

२१७  
नननुंविम्वडिगापन॥००॥मिबु

भदभदभभुवेसुगापमत्रि

उ॥यशिकःभममेभभुमु

भभुमुनदभुनः॥०३॥उडैक

भुंगड्डुंभुविठडुनवेका॥

सपमृद्वेवरेवभुमगीर्य

उवभुम॥०३॥उडःभविभ

सी  
ठगी

३००



यविष्णुहृदिगिरिपुत्रः॥

५॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

लिगठयउ॥०२॥मृतनुव'स॥

पञ्चभिरिवंभुवरोवरोदेम

वंभुषाकृतविमेषमस्तु

इन्द्र भीमिंकगलभनभु

०५  
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

२५१  
मनेकमद्रुगवज्ञेइय

मृनिद्वंभवडिनडुडुपन॥

नडुंनमष्टनधनमुवलिंय

मृनिविस्त्रुमुविस्त्रुपं॥॥

किगीटिवंगरिनेरत्रिंश

उद्गमिमभवडिरीधुमडु॥

यमृनिद्वंसुत्रगीकुंभमडु॥



स्त्रीपुत्रलक्ष्मिउमयमेय

म॥०१॥ इगङ्गापगमंवेदि

उवृङ्गमृविमृपगंविणं॥

इगवृयःसुमृणङ्गोपुमन

उनमुपुमयमडिमे॥०३॥स

नारिमण्टुननकुवीदमन

उवृङ्गममिसदनेइम॥५

मृभिद्वीपुद्रुडमवकुं

३५॥ मविमृभिगंडपुय॥

॥००॥ मृवपुविष्टेगिरुगु

गेदिवृपुंडयेकेनरिमसम

चः॥ मृधुसुडंडुपमगुंडवेरं॥

लिकउयंप्रविष्टिउंभदउ

न॥३॥ मृगीदिदंभुगमज्ञ

श्री  
रुगी  
३०३



विमलिके रिम्लुङ्ग पूरुल

येगुल्लुडु॥ सुभीडुडुमप

विमिसुमल्लुः सुवडुडुडुडु

किः पडुल्लुकिः॥ ३०॥ मसु

रिडुवमवेयेगमल्लुविसे

सुनेभनउसेभपल्लु॥ गरु

वयडुमगमिसुमल्लुवीडु

२२३  
उङ्गावन्मिडस्यैवमवे ॥३३॥ ३

पंमदउङ्गावन्मिडस्यैवमवे

दिङ्गावन्मिडस्यैवमवे ॥३३॥ ३

गंङ्गावन्मिडस्यैवमवे ॥३३॥ ३

पृष्ठविडमुषादन ॥३३॥ ३

भृशंरीपुननेकवल्बुडु

ननेरीपुविमलनेडन ॥३३॥ ३

श्री  
ठगी  
३०३



दिङ्प्रवृषिउनुगङ्गपडिं

विश्रुभिमभंगविष्णु॥३२॥

संभूकालनिगडेभाषनिम्

ध्रुवकालपलमंत्रिठनि॥

शिमिनेरनेलठममप्रभूमी

सरोवेमिगत्रिवभ॥३५॥

सनीसङ्गपडाध्रुमुपडः॥

भवेभदैववनिपालभङ्गः॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३३ ॥

भिमदभ्रसीयैगथियेण

पैः ॥ ३४ ॥ वदुः ॥ उदुः ॥

ॐ विमदुः ॥ कगलनि

ठयानकनि ॥ केरिपिलय

रमनरुगेधममृषुतेयुलि

उमउमद्वैः ॥ ३५ ॥ यषनरी

म्री  
ठगी

३०२



२२६  
नन्दवेधवेगः भभसूनेव

ठिगापसूवात्रि॥ उषाउवमी

नगलिकवीरं विमडिवकुश

ठिउललत्रि॥ ३३॥ यषधूमी

पुंलनंयउङ्ग विमडिनम

यभभसूवेगः॥ उषैवनम

यविमडिलिक भुषाधिवकुश

॥ भगवद्वेगः ॥ १० ॥ लेमि

छमननः भगवद्वेगः ॥ १० ॥ लेमि

एवमनेष्टलमिः ॥ ३० ॥ लेमि

गपुदरगङ्गमगंठमभुवे

गः पूउपडिविह्ले ॥ ३० ॥ लेमि

दिमेकेठवगङ्गुयेनमिभु

उमेववगपूमीरविह्लेउमि

श्री  
रुगी

३-५



कवतुनामुनादिपुस्तकमि

उवपुडिपुअ॥३०॥मीठगव

गवम॥ कलेभिलिकका

यदइवमूलिकमुनादु

भिदपुवउः॥उउपिहुंनठ

विषुडिभवेयेवभ्रुड'पुह

नेकेपयेणः॥३३॥उम्भुइ

गडिधुयमेलठसुलिडम

इकडुगष्टमभसूग॥ नये

वैडेनिदतः प्रचमेवत्रिभि

उमडंठवमवृमगिन॥ ३३॥

मैरंरणीधंरगयसूखं

सकलंडुषट्टनाथियिठवी

गन॥ मयादडमुंरदिन

श्री  
ठगी

३.५



वृषिष्वायुसूभृत्तुभिर्ल

मयङ्गना ॥ ३॥ भस्त्रयवस ॥

पुत्रसूत्रवसनकेमवमृदाउ

सुत्रियेयननः किगीपी ॥ न

भक्तद्वयपारवदलश्रंभ

गङ्गारंठीउठीउयू ॥ ३५ ॥

॥ सुतेवयस ॥ सुनेहषीकेम

२३१  
 उवयकीरुगडुदुष्टु  
 भूतेर॥ गकाभिठीडनिरि  
 मिस्रवडिभवेनगभुडिराभिस्र  
 मध्यः॥ ३०॥ कभसुतेनमे  
 गमदुजगीयमेवदुष्ट  
 श्री ॥ गिकडु॥ चनडुवेमगात्रि  
 ठगी  
 ३०१ वभवनकंगभरुभडुडुगंयड॥



२३  
इमांतेवःपुनःपुनः॥

भूतमुविमुमुपुगंविण्णम्॥

वडांभिवेमुंयपुगंयपुगम्॥

इयउउंविमुभननुकुप॥३३॥

वयदमेगिक्कःममदः॥

परपडिमुंशुपिडामदम्॥

नमेगमुमुमदमुददःपुन

सुहृद्योपितमेवममु॥३७॥

नमःपुनरुग्रयधष्ठुडमुनि

मुडभवडावभव॥मननुवी

दगिउविस्मभुंभवमग

प्रेधिउडेभिभवः॥२॥भापाडि

भट्टप्रमठयगुडुंददप्रळ

यगवदभापाडि॥यल्लड

श्री  
ठगी

३-३



मदिननेउवरंभयधूमरा

३५॥ येनवाध॥२०॥ यस्तुवद

मउममङ्कडेभिविरमयुमन

६॥ नेष॥ किषवभृमुउउम

६॥ उउमयेवमदमधुमेयं॥

३३॥ पिउभृलेकभृरागरभृ

३३॥ उमभृपुष्टमृगुनगीयन॥

नरुन्नीभुष्टुणकः उडिचेल

कश्येभुष्टुणकः उडिचेल ॥३॥

उम्भुष्टुणकः उडिचेल

भरुयेहभदभीमभीष्टुण ॥

थिडेवपुष्टुभगष्टुवभाष्टुः थि

यः प्रयायः दमिरुवमिष्टुण ॥

॥२॥ भरुष्टुप्रचंडथिडेभिष्टु

श्री  
ठगी  
५०७



236

सू० येन गपृष्टा षडं नने मे ॥

उरुवनेरु मयमेव कुपं ॥ ५ ॥

भीरुमेवे मरुगात्रिवम ॥ १५ ॥

किगीटिनंगरिनं सरूपमु

भिमृमिडंरुधुनदंउषेव ॥

उनेवकुपं मरुडुनमद

भूठदठवविमुमुउ ॥ २० ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ नमः प्रभु

नेन उवाच ॥ त्वं नमः प्रभुं यमं गच्छ

उवाच ॥ इति नमः प्रभुं

सुभनतुमः ॥ इति नमः प्रभुं

नमः प्रभुं च ॥ २१ ॥ नमः प्रभुं

इति नमः प्रभुं नमः प्रभुं

नमः प्रभुं नमः प्रभुं ॥ इति नमः प्रभुं

श्री  
गणेशाय

३००



महाराजदंरुलिके सुखे इति

देवता न प्रवीण ॥ १५ ॥ भउवृ

षा न राविभरुठकेरुधू

कुं प्यिग्ने प्रमेरुम ॥ वृपउ

मीः पीउमनः पनमु उरुव

मेरुपामिं पूयमृ ॥ १७ ॥ मल्लः

यवरा ॥ उडुलनं वभुम्व

भुषिङ्गाभकंडुयंरुचयभ

भकुयःभुसुभयभभर

ठीउनेनंकुडपुनसिभुवपः

मजकु॥५॥सुसुववका॥

मधुनेभभुयंरुपंडवमेभुं

एनभुन॥उरुगीभभुभंरु

उःभरोडःपुढाडिंगडः॥५०॥

श्री  
रुगी  
३००



ठगवन्वरा ॥ भुरगुमभिरं

भुंरुधुवनभियन्न ॥ रुव

सुप्रभुधुवनभियन्न ॥ रुव

रुवः ॥ ५३ ॥ नदंवेरुवुधुवन ॥

नदंवेरुवुधुवन ॥ मद्राव

विण्णुधुवनभियन्न ॥

५३ ॥ ठगवन्वरा ॥ भुरगुमभिरं

मेवंविपिस्तनल्लउमध्वराउद्धा

प्रवेधंरापगुप॥५२॥भक्तम

दञ्जयभिनमृताःभक्तवर्ति

उः॥विचैःभववहुउषयभ

भमेडिपल्लव॥५५॥उडिमी

ठगवझीउभयनिषड्वरुवि

हृयंयोगमभुमीदभ्रसुन

श्री  
ठगी

३३



मंवरुविमुडुपममननमैक

रुमेरुयः॥मसुनुडवम॥

एवंमउउयकुयेककुभूंयद

यमउ॥येमपुङ्कमवृकुडे

यंकेयेगाविडुमः०॥कगवव॥

मयवेमृमनियमंविडुयकु

उयमउ॥मसुयपययेपउ॥

भुनेयकुउमभउः॥३॥येइक

ग्गनिरेमृमवृउपदपमउ॥

भवइगभगिउंगऊठभुमगं

एवं॥३॥भत्रियनेद्रियगभं

भवइमभवसूयः॥उपपुवति

श्री  
कगी

भभेवभवइउदिउउः॥३॥ले

मिठकउग्गुपभवकुमकुगेउ

३३



भं मृडादिगाडिपुपेपवमि  
ग्वपृउ॥९॥येडभवाक  
मुभयमहमइरः॥स  
नहनैवयेगेरंमृयकुड्य  
मउ॥८॥उधनदेमभमृ  
भइमंभमभगउ॥ठवमि  
ममिरमिगडउमयवेमिउ

गेउअम॥१॥ मयुवमवमु  
 इम॥यिवप्रिविमय॥ निवम  
 धममयुवमउऊवममयः॥  
 ५॥ मयगिउमम॥उमम  
 विमयिमु॥ मयुमपुम  
 मउमिममपममव॥७॥  
 मयुमयगेवउममिम

श्री  
 कर्ग



CC-0 Ayaz Rasool Nazki Sharada Collection. Digitized by eGangotri

२५७  
मृदलङ्गगङ्गुगङ्गुङ्गुङ्गु

॥०३॥ यमुषुभवकुडनंगैः

कमपवरा॥ विम्वेविम्व

कः॥ मममापभापकनी॥०३॥

मकुषुमडुङ्गुगीयडुङ्गु

विम्वयः॥ मयुदिङ्गुविम्वि॥

देमकुङ्गुममेधुयः॥०२॥

सी  
रुगी

३०५



२५४

यमत्रेष्टिः उलिकेलिकवेष्टिः

उरयः ॥ दक्षमद्यठयेष्टिः

॥ मुत्तियः मरमोष्टिः ॥ ०५ ॥

मनयेष्टिः मरमोष्टिः ॥ ०५ ॥

उष्टिः ॥ भवमृष्टलष्टिः ॥

येनमृष्टः मरमोष्टिः ॥ ०५ ॥

नक्षत्रतिनष्टिः मरमोष्टिः ॥

२५१

दाडि॥ सुठमुठपागिठगीठडि॥

भट्टमभेपियः॥०१॥ममःम

इराभिइराउषभनपमवयेः॥

मिठिठभापमापेषमममम

विवलिउः॥०३॥उलुनिमभुषि

मैनीमभुषेयेनकेनशिउ॥स

विकेउःमिगमडिठडिनम

म्री  
ठगी

३०८



२५०  
धियेनः॥०॥ यउण्डुमउ

भिरंयषिउं पदपमउ॥सू

सुणनमउमठउमुडीव

मेधूयः॥३॥ अडिमीठा

वझीडभपनिषडुवमविष्ट

येयगमभुमीतल्लुगमं

वमउयिगेनमसुममष्ट  
यः॥

सत्तानुवा ॥ पूठडिपुनयं

येवकइकेइल्लमेवर ॥ एउ

मुदिउअिमुअमिहनेल्लेयं

यकेमव ० ॥ ठगवनुवा ॥

उमंमगींकिउयेकेइमिउ

ठिणीयउ ॥ एउम्वेउउंपूफः

केइल्लमिउउम्विः ॥ ३ ॥

श्री

ठगी

३०१



कङ्कलं गगधिगंगविमुभव

कडपुगाड कडकडपुड

नृपुण्ड्रमंडलम् ॥ ३ ॥ उ३

इयञ्जय मञ्जय सिक्किय

उच्चयड॥भरयेयडूव

ॐ उड्डनाभे नमः ॥ २ ॥

विठ्ठलरागीउंमनेमि

चिविठैः पषको ॥ वृद्धमइ

परै सैव देडुनामिचिविचि

डैः ॥ ५ ॥ मदकुटावृद्धकवे

मिगवृद्धमेवरा ॥ उम्रिया

रमैकं यथामुखे म्रियगिर

मी  
ठगी

रः ॥ ७ ॥ उम्रियुधः भापंयुः पं

मङ्गउम्रेडनपुडिः ॥ पड्डे



भमभनमविकंगुलदुं॥

१. सुभगविहंगमभिहंगम

दिम्भाङ्गाङ्गलवम् ॥ शुभा

द्विपभनंमिशंमुदनाडुवि

विष्णुः ॥ ३ ॥ अक्षय उषवे

मृगवद्विगणवत् ॥ ५३ ॥

अनङ्गुल गङ्गापिमुःप

२५५  
सिधनरुचनन ॥ ७ ॥ नम

डिगनकिषुङ्गः पडरग

दमिष ॥ निडुंरममसि

उरुमिषु निषूयपडिषु ० ॥

मयिरनट्टियगेनरुडि

श्री  
रुगी

वडिगगि ॥ विविडु

३३०७

ममेविद्वमगडिलनमंभूमि ॥



७२५६

मण्डपानिहंतुं उरु

उरुमनन ॥ पउल्लुमिडि

पुडुंमल्लनंययउटष ॥ ०३ ॥

ल्लयंयउडुवहामियल्ल

इमेक्कममुड ॥ मगरिम

उगवुडुमभउवममुड ॥

०३ ॥ मवउःपानपयउडुम





र॥ अ॥ इ॥ उ॥ वि॥ लो॥ यं॥ म॥

मं॥ रा॥ त्रि॥ के॥ रा॥ उ॥ ॥ ०० ॥ म॥ वि॥ क॥

उं॥ रा॥ क॥ उ॥ प॥ वि॥ क॥ उ॥ भि॥ व॥ रा॥ भि॥

उ॥ म॥ ॥ क॥ उ॥ क॥ म॥ उ॥ लो॥ यं॥ रा॥ भि॥

॥ क॥ म॥ वि॥ क॥ रा॥ ॥ ०१ ॥ इ॥ ति॥ धृ॥

म॥ धि॥ उ॥ इ॥ ति॥ म॥ न॥ म॥ ॥ पा॥ न॥

उ॥ लो॥ नं॥ लो॥ यं॥ लो॥ न॥ ग॥ मं॥ द॥ रि॥

२५९

मचमृवाधुडम॥०३॥उडिक्

इंडवहृनं॥यंरुंमम

३ः॥ममृडाउडिहृयममृ

वधियपमृउ॥०७॥पूढाडिं

पमधंरैवविमृनरीउठवापि॥

विकनंमृगुल्लंमृवविमृ

पूढाडिममृवान॥३॥कद

श्री  
ठगी

२००





१२६  
ठिङ्गमदिसुः॥ परमदु

डिगपुडिरेदेभिदुमः

परः॥३३॥ याववेडिपुडि<sup>५१</sup>

पंपुदडिंरगुलैःमद॥वि

कंभवषवडुमनेपिनम

कयिठिएयड॥३२॥ एनेन

इविपमृडिकेरिगडुनन

श्री  
रुगी

१०७



इमं सृष्टमस्तेन योगेन

भूयोगेनिसाधय ॥ ३५ ॥ सृष्टे

वमएनतः सृष्टेः सृष्टयाम

उ॥ उ॥ अधिगताः उ॥ उ॥ इत्यमं

सृष्टिप्राप्तयः ॥ ३६ ॥ यव

इत्ययं उ॥ इति सृष्टिः सृष्टयाम

इत्यमं ॥ इति सृष्टिः सृष्टयाम

5263  
गाउसिमुठगउछ०३१॥

ममंमवेपकुउपुडिभुउंफ

मेसुगं॥विनमृदुविनमृदुं॥

यःपमृडिमयमृडि॥३३॥म

मंपमृदिभवउममवभु

उभीमुग॥नदिनमृदुं

इनंउडियडिपगंगडिम॥३०॥

श्री  
रुगी

२०३



६५  
पूठाडिवराकम्पिस्त्रियम

मन्त्रनिमवमः॥ यः पष्ट

डिउषाङ्गनकडुगंमपष्ट

डि॥३॥ यराङ्गउपपगुव

मेकमुगनपष्टडि॥ उउः

वसुविभुगंरुद्रसंनपष्ट

उरा॥३० मन्त्ररिहविनु

॥ इन्द्राग्र इन्द्राय नमः ॥

मगीरुमुपिकेनेयनकमेति

नलिपुत्रे ॥ ३३ ॥ यषाभवा

उमिद्राग्रकमनेपलिपुत्रे ॥

भवतावशिष्टेदेउपाग्र

नेपलिपुत्रे ॥ ३३ ॥ यषाग्रक

मयदेकः दंडुलेकभिभंग

श्री  
रुगी

२०२



विः कडुईउषावडु

प्रकमयाडिगउ॥३१॥के

इकेइ॥येगवमडुगं

गदध॥कुउप्रतडिनेकं

येविमदाडिउपगम॥३५॥

७डिमी॥गवझीडुपवि

धडुवद्विष्टयंयोगम

श्रीगणेशाय नमः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

येन मे पापानि क्षमा भवतु

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

स्वाहा ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

स्वाहा ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

स्वाहा ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्री  
गणेशाय

१०५



मयमृदमगममृदम

गडः॥मनेधिवेयएयउ॥

पूलेयेनविषडिउ॥३॥

मनयोनिमदमृदमृदमि

नंठंरुणमृदम॥ममृ

वःमवमृदमं॥उउठवडि

ठगड॥३॥मवयेनिषके

उयप्रुयःमभुवडियः॥

उभंरुद्रादष्टेनिरुदं

गीरूप्रापिउ॥२॥म

महंरुद्रादष्टेनिरुदः

प्राडिमभुवः॥निरुप्र

डिमदरुदरेदरेदरु

मवृयम॥५॥उडमहं

श्री  
रुगी

२०५



निलम्बदृक्कमकंगम

यम॥ मयममेनवप्रडि॥

ल्लममेनयप्रय॥०॥॥

गगङ्गकंविम्विडुल्लममेन

मम्वन॥३विषप्रडिके

डेयकमममेनयेदिनम॥

१॥३ममुल्लनंविम्विडुमेप

२७  
नंभवरेदिनम् ॥ पूगम्

नमृनिष्ठाठिउविठप्राडि

ठाउ ॥ ३ ॥ मडंमुयेमस्य

डिम्ः कम्लिठाउ ॥ ४ ॥

भवट्टुमः पूगरेमस्य

दुड ॥ ७ ॥ गम्मुमञ्जठिठ

यमडंठवडिठाउ ॥ ८ ॥ म

श्री  
ठागी

२०१



इंडनैवउमः भंडम

भुषा॥०॥ भवमुग्धेदे

भिरूकमउपएयउ॥

होयराउरविष्टमिक्

मुंमदभिदुउ॥०॥ लिहप

वडिगमः कभमममः

भद॥ भमेडनिएयउ॥

उत्तिष्ठमविराजितकनक

श्री  
ठगी

५०३



२३७५

लच्छुडियष्टे॥०२३५॥

मिथुलयंगेइकभमदि

षष्ट्ये॥उषपूलीसु

मभिप्रुयेनिषष्ट्ये॥

०५॥कभः॥मवउमृद

मदिकेनिमूलंठलं॥३

१॥ममुदलंमःपमल्लं

उममः॥दलन॥००॥मडू

अहयडेह्मं॥मेलिठा

वरा॥पुमारमिदिउममे॥

॥ठपडेह्ममेवरा॥०१॥उ

॥बंगमृडिमडू॥मपेडि

डिगमः॥॥गैरुगु॥००॥

उममः॥मणिसुडिउममः॥०३॥

श्री  
ठागी

१०७



नष्टं गुहः कडुं यमसूत्र

नयम्युडि गह्वरपंगवेडि

नम्रवं मेणिगमुडि ॥ ७७ ॥

गुह्येन डनडी इति दीपे

भनयुवन ॥ ७८ ॥

मापे विगुडि डनमुडि ॥ ७९ ॥

श्रीकृष्ण उवाच ॥ ८० ॥

कैलिङ्गेश्वरीनुपेउमडी

उक्वडिपू॥ किमराःक

वंगैडंभूनुनडिवडु॥

३०॥ अगवमवरा॥ पूकमं

मपूवडिंमिदनेवराय

उव॥ नैसुधिभंपूवडानि

निवडानिकडूडि॥ ३३॥ उम

श्री  
ठगी

७३

५००



2578  
भीवरभीनिगुलेदेवि

गष्टिउ॥गु॥वडुडडेव॥

यिवाडिधुडिनेङ्गडे॥४३॥गम

मःपमापःममुःममलिधु

मककुनः॥उलधियाधि

येणीगमुलरिउअममु

डिः॥५॥मनपननयमु

लुमुलिभिश्चिपकयैः॥

भवाम्भुपगिहगीगुली

उःभउमृउ॥३५॥मंशये

वृक्षिगो॥ठडियिगेममे

वउ॥भगु॥मगडिहउः

वृद्धभययकलपउ॥३६॥

वृद्धभदिपडिधुदगम

म  
मगी

५००



उभृवृथभृम॥सामुउभृ

मपुभृमापमैकडिक

भृम॥३१॥७३मीळाव

मीउभृयनिषडुभृमवि

मृयंयोगमामुमीवळ

लनभंवरेगु॥३५॥

मेयिगेरभरुडमिष्टयः॥

ऋग्वक्त्रवाम॥ ऊब्रुमलं  
 भठमापनमुत्तंरुद्र  
 वृयं॥ सुवमियभृपल  
 नियमुंवेरुभवेरुविउ॥०॥  
 मण्डिचंप्रभाडभुभृमप  
 गुप्पवसुविषयप्रव  
 लः॥ नमस्तुलाटुम

मृ  
 ऋगी

५०३



उडनिकमन्नरुषीनिमन

एलिके॥३॥नडुपममृद

॥उषिपलरुडनडिनगमि

नेयममृदाउषु॥ममृपुने

नेमृविडुरुनलनममम

ममृमृरुनरुडिडु॥३॥

उडःपरंउडगिममिउवृ॥

283

यभिज्जडननिवडुडिडयः॥

उमेवसामुंममपंपुपुष्टे॥

यडुप्रवडिप्रमडपुगली॥

२॥ निवडनमिदगलिउमड

विषमपुडुनिष्टविनिव

उकमः॥ सुदुविमडुम

पमःपमसुनसुडुडु

श्री  
मगी

॥३॥



२४१  
रुथरुनवृयंडड ॥ ५ ॥ ३

सुभयडमुदिनममाङ्कन

पवकः ॥ यस्तुहृननिवतु

डुडसुभयामंभम ॥ ७ ॥

भमेवांमेश्वरिक्केश्वरि

वकुडःभनडुतुः ॥ भनःप

धुनीश्रियगल्धुदाडिभु

निकषडि॥ मगींयरा

पेडियस्यथुल्लडीसुः॥

गदीडैअनिमंयडिवय

गरुनिवमवाउ॥३॥ मिडुग

कुःमपमनेमगमनेपुल्लमे

वरा॥ मण्डिषुयमनसुयं॥

विषयनपमेवउ॥७॥ डडू

श्री  
ठगी

पुन



२४६  
मनुंभुउंवापि॥कुल्लमंवरु

॥उविउम॥विप्ररुननय

मृति॥यमृति॥रुनगद्वपः॥०॥

यउउयिगिने॥नंयमृउउ

द्वमृउम॥॥यउउयुदउ

अनेनेनंयमृउउमः॥००॥

यरा॥रुदुगउउ॥रुगद्व

मयउपिलम॥यसुसु

मियसुगुडेलेविमि

ममकम॥०३॥गमवि

मसुसुउनिगयभुदने

मः॥योसुमिसिपणीः

मवः॥मेमेसुउमभुक्रः॥

०३॥सुदेवैसुनगिदुपु

श्री  
गंगा

५०५



१२८८  
निर्गुरोदिनामिउः ॥ ५० ॥

यमममयुक्तः यममयुक्तः

उचिष्टम ॥ ०५ ॥ भवमयुक्तः

हमिमत्रिविष्टम ॥ ०६ ॥ भवमयुक्तः

हमिमत्रिविष्टम ॥ ०७ ॥ भवमयुक्तः

हमिमत्रिविष्टम ॥ ०८ ॥ भवमयुक्तः

हमिमत्रिविष्टम ॥ ०९ ॥ भवमयुक्तः

२४५  
 भिन्नमयैलिकेकगुप्तका  
 मेवम॥ कगमचापि कृत  
 निरुद्धमुक्तमउत्तु॥०॥  
 उतुमःपुमधमृष्टःपगमा  
 इदम॥ छतः॥ येलैकइय  
 भविमृष्टिठुद्वयगंमः॥  
 ०॥ यममृष्टमडीउदम

श्री  
 मगी

५००



काग्राधिगिडुमः॥स्रडिभि

लिकेवेरुगधूषिउः॥पुनषिउ

मः॥०५॥यिममेवममम

रिएनडिपुनषिउमं॥मम

वकिरुएडिमं॥भवठवेन

ठगउ॥०७॥डिगुदउमं॥

भूमिरुभउं॥भयनप॥

२०१  
॥ उ० सु० व० सु० म० इ० इ० उ० न०

सु० ग० उ० ३ ॥ ७ डि० मी० ग० व० मी०

उ० अ० प० नि० प० इ० व० र० म० वि० म० यं०

यि० ग० म० मे० मी० न० १० ॥ सु० व० म०

व० र० ५० म० वि० इ० म० यि० ग० न० म० प०

सु० र० मि० ए० यः॥ ग० व० न० व०

य॥ म० न० य० म० इ० म० सु० मि०

मी  
गमी

५०१



२१२  
एनयोगवभिडिः॥२॥

भस्ययः॥३॥

सुज्ञावं॥०॥

रूपभुगः॥३॥

यकुडेवलेनडेभसुवंशी

गगधलन॥३॥

भः॥३॥

२५३  
भानिडा॥ ठवडिमभदरंरै

वी॥ ठिएउमृठगड॥ ३॥ र

भैरवैठिमभनसुत्रिण्यम

धपवर॥ महुनेराठिए

उमृपारमभदरनभुंगी॥

२॥ रेवीमभद्विभेकय॥

निरुद्धयभुगीभडा॥ भ

श्री  
ठगी

५०३



२२५  
सुगः भभरुं रवीनकि

एडमिठगड ॥ ५ ॥ मुकुउम

जेलिकेभ्रैवसुमुग

वग ॥ रैवेविमुगमः पूजुसु

भंगपउनेम ॥ ७ ॥ पूव

डिंरविठडिंर ननविम

गभुगः नमिसंनधराग

विमहंतेषु विमहंते ॥ ॥

महंमयुडिधुडिगगा

द्वारीमग्न ॥ चपाभद्र

महंते किमहंते महंते ॥

३ ॥ अहंते धूमवधुधुधु

अनिलवसूयः ॥ धूमवधु

गुरुमः ॥ कयाय ॥ गति

श्री  
गंगा

३

५०७



दिउः॥७॥ कमगसिहसु

धुंगरभुनानमराविउः॥

भिनसुफीहभसुदसु

वउउसुरिवउः॥०॥ गिउ

भगिभेयंसुपुलायाउम

पगसिउः॥ कभेपकगप

गभाउउवसिउनिस्त्रिउः॥  
००

सुमधममैडवसु कन

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ममिगाउमटयेरउमष्ट

यन॥०३॥ ईश्वरमय

लघुभिर्युग्मनिर्गमं॥

ॐ नमः शिवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ०३ ॥ श्री

ਸ੍ਰੀ  
ਠਗੀ

3 5..



१२९४  
भयादडः मडूदनिष्टेरा

पग्नधि॥ गंशुदिनदंठि

गीभिमुदंरलवकुपी॥

०२॥ सुष्टिभिः नवनभिः॥

केष्टुभिः मरुमेभया॥ य

कृष्णभूमिभिरिष्टुडडि

लूनविभेदिताः॥ ०५॥ पुन

कशिडविहं'डु'मिदएल

भगवडः॥धूमकु'कम

ठिगेधु'पउडिनकेमुये

॥००॥सुडुमभ'विड'भुवू॥

णनभ'नभरु'विडः॥यए

उमभयल्ले'मु'भुन'वा॥

धवकन॥०१॥सद'कु'भ

श्री  
ठगा



लंरुदं कं मं रिं रं मं मि

उः॥ मं मं उं पं गं रं दे वं पं

विष्टु उं रं मं यं कः॥ ०३॥ उं

रं दं विष्टु उं रं मं मं गं

धं वं गं गं मं न॥ विष्टु मं रं

मं मं मुठं नं मं गीष्टु वं यं

विष्टु॥ ००॥ सुभं गीष्टु नि

301

मथत्राभुखरुमनि

मनि॥ मभपुपुवकिनु

यडडियाडिपमंगाडि॥३॥

डिविपनरकभुमंमुगं

मनभडुः॥ कभरिणभु

षलिभुभुभुउडयंड

रुड॥३०॥ णैडिविगडुःक

श्री  
गंगा

५९



२०  
उयउमिसुरेश्वरः॥

सुराष्ट्रः मयभुडियात्रि

पगंगाडिं॥३३॥यःमाभुवि

ठिभुडुवडुडुकभक

गडः॥नमभिसुभवप

डिनभापनपगंगाडिं॥३२॥

उमसुभुपुभुडुडुकद

कदविविमुडि ॥ सुवमसु

विणनिशंकमकतुविपद्य

मि ३५ ॥ अडिमीठ्ठावम्मी

उम्पनिषदुवृष्टविष्ट

यंयिगमसुमीठ्ठावम्मी

मंवरुरेवममममप्राडि

यिगममपिठ्ठावम्मी

श्री  
ठगी

४७



मस्तुतवम॥ येनामुविपि

भुङ्क्ष्यन्ते मुमुक्षुः

उः॥ उवांगिषु उकदम्

भद्रादिभ्यः॥०॥

गवामवम॥ शिविण्ठव

उमुमुष्टेनं भुम्भुव

॥ भद्रिकीर्णमेव

॥ ३०५ ॥  
उममीरेडिउंम ॥ ३ ॥

भइरुपुभवभुसुगव

डिठगउ ॥ सुभयियंभ

धिययेमुसुभापवमः ॥ ३ ॥

यउंभदिकरेवट्ट

गंभाभगमः ॥ पूउकुडा

ॐ सुदेयरुउमभ

वः ॥ २ ॥

श्री  
गंगा

ॐ



306  
ममभुविदिउंयिगंडपुत्रे

येउपरि॥ नः॥ मभुदकमे

यउः॥ कभगगगलविउः॥

॥ कषयउः॥ मगीगमुंडउ

गभभगउमः॥ भंगैवउः

मगीगमुंडउविमूभगविमू

यन॥० उदगमुंधिमव

मु॥

॥ शिविर्गोळवाडिप्रियः ॥ यः

भुपभुषणं देवं केरुति

॥ अंम ॥ १ ॥ सुयभद्रल

गिभुपप्रीडिविवरनः ॥ २ ॥

भुः भिगु भिगु हृष्ट भुप

श्री  
कगी

गः भाद्रिकाप्रियः ॥ ३ ॥ कः

८-५

भलव ॥ ४ ॥ डी ॥ ५ ॥



कविगादनः॥ सुदगग

भस्त्रेष्टुपमैकभयपू

रः॥ ७॥ याउयभंगउमं॥

उपदुधितंयउ॥ उष्ट्र

धूमधिराभेष्टुं॥ नंडम

माधुयम॥ ०॥ नदला

कंठिद॥ विठिमू

यजुष्टे॥ यधुष्टेवेतिम

रःमभरायमभद्रिकः॥००

॥मठिमत्रयडलंरभुड

मधिरैवयड॥००००००

उम्रधुडंयष्टंविमिग

श्री  
ठगी

मं॥०३॥विणिदीनंमभधु

८८

वंमइदीनमरुकि॥



सूत्रविगदिउंयल्लंउम

मंयगिरकृते॥०३ रेवसि

रगुमयल्लुनंमिर

नत्तावन॥वृद्धगदम

दिंभगमगीगंउयउमृते॥

०२॥ननुसुगकंवातेम

उंयिदिउंययड॥मुष्ट

यहमनेमेववद्वयंउप

गुड॥०५॥भनःधुमरुःभे

थंडेमेवमउविनिगदः॥

ठवमंसुमिगिडेउपेन

मउमृउ॥००॥सुसुयपय

उपुंडपमुउविपंनः॥मठ

लकदिठियुतेःमडिकं

श्री  
रुगी

8-9



312

पगिगद्विडे॥०१॥ मङ्गमा

रपएउंउपेमभुवमैवयउ॥

शियडेउरिदपूउंगरभंर

लमभुवम॥०३॥ मरुगदि

ॐ उनेयद्दीमुयशियउउ

पः॥ पगभैडुपनउंवउउ

ममभुगद्विडे॥०७॥

313

उडवुमिदियमुनंरीयउ

वपकारिले॥रमेकले

सपडेसउमुनंभाडिकं

मुडम॥३॥यडपूडपक

गउंदलगमिबुवपनः॥

रीयउसपगिल्लिपुंडमु

ममरादउम॥३०॥मरे

श्री  
रुगी

३-३



मकलेयसुनंगपाउरु

सुगीयउ॥ममइउगव॥

उंउउममममदउ॥३३॥

उंउउमिडिनिरेमेवुदु॥

मिविःमुः॥वुदु॥मु

नेयमसुय॥सुविदिउ

पु॥३३॥उममिभदु॥

३१५

छट्यस्मिन्मण्डपः शिष्यः॥

पूर्वतुल्यविष्णुः मण्डपः

वशिष्ठः॥ ३२॥ उत्तिष्ठति

मन्त्रायकलं यस्मिन्मण्डपः शि

ष्यः॥ मन्त्रश्रियाञ्च विविधः॥

शिष्येभ्यः कदाचिद्विधिः॥ ३५॥

मन्त्रवेत्ता प्रथमं वेत्ता मन्त्रि

श्री  
गंगा

३७



उद्युष्टे॥ प्रममुकम्

उषामसूत्रः पद्युष्टे॥ ३०॥

यष्टे उपमिगनेराभुति

भरिडिरीष्टे॥ कम्पयेव

उम्पेयीयभरिडेवठिणीय

३॥ ३१॥ प्रमसूयदंरुं॥

उपमुपुंठंरयड॥ यम

३१७  
सिद्धसुखं पञ्चरात्रं उच्यते

वेद ॥ ३५ ॥ ७ डिनी ठगव

मीडं प्रयनिषड् वृद्धं विष्ट

यं योगमभुमीतल्लुन

मंवाः इविष्टसुयोगे

नमभपुष्टमैष्टयः ॥ ०१ ॥

मल्लुव'य ॥ मष्टमष्टम

श्री  
ठगी

१००



३१४  
पठयेत्तु भिक्षु भवेति

ॐ ॥ इगभृष्टवृषीकेमथ

वक्त्रे मिनिभृष्ट ॥ ० ॥ अग

वनवरा ॥ कष्टनेकम्

ॐ नमो भगवते कवयेति

मः ॥ भवकम्पलङ्गम्

कम्पुगंविश्व ॥ ३ ॥

३३११

सृष्टं रथवारिडेके केमरु

मनीधिः॥ यरुनउयः

कमवट्टमिडिरायो॥३॥

निम्रयेमभुमेडइडगो

गुमडम॥ डगोदिपनय

वृप्पुडिविठः मंप्कीडि

उः॥२॥ यरुनउयकम॥

सी  
ठगी

१००



320

नष्टं कथमेव उ॥ यस्मिन्

संयं डयं चैव यं वरं विगमं

विष्णु॥५॥ पञ्चविंश

कैशिक मंडल

निम्न कृष्टनीतिमेवम् ।

निम्निङुमडुगडुम॥०॥विय

उमृउमृमःकृत्

५५६३

३२१

भेदउच्युपिडुगमुभमः

परिकीरुतः॥१॥ द्यापमिडे

वयङ्कमकयत्वेमठय

डलेउ॥ भनडगभंठ

गनैवडगठलंलठउ॥३॥

कदमिडेवयङ्कमनियडं

उमडेलन॥ भंमं डडकलं

श्री  
८गी

१०९



सैवमडुगःमण्डिकेनडः॥

७॥ नसेधुडमलंकभड

मलेननयपड्डे॥ डगीम

इमभगविकुनेणवीमिन्न

भंमयः॥०॥ नदिरुदरुड

मठंडडंकभटमेषडः॥

यभुकभडलडगीम

323

हृषीकेशाय नमः ॥००॥

श्रुतिधुमिसंगडिविपंक

ॐ: दलन ॥ कवट्ट

गिनं प्येहनउमवृष्टनेक

गिउ॥०३॥यस्यैडा निमडा

मदिकर निनिवेष्टने॥

महेश्वर उचैयैका निमित्त

श्री  
गंगा

25



यमवकम् ॥ ०३ ॥ म  
 णिधूनं उपकडुकरं ॥  
 पृषाणि ॥ विविण्मय  
 वज्रैश्चैवं रेव इयम्  
 ॥ ०५ ॥ मगीवद्भनेठिद  
 कम्पुगठेनः ॥ शयैव  
 विपगीडं पञ्चैडभृदे

उवः॥०५॥ डैवमडिकुंगं॥

भङ्गनकेवलंडयः॥५॥

डिण्डवुमिडुक्रमपमृडि

ममृडिः॥००॥ यमृनदंनडे

ठवेवुमिदमृनलिपुडे॥६॥

इयमभमंलृकनदति

ननिठपुडे॥०१॥ लुनंल्लयं

श्री

गंगी

१०२



परिहृतादिभिः कर्म  
मनः कर्म कर्म कर्म  
विष्टः कर्म मर्मः ०३ हनं  
कर्म मर्म कर्म मर्म  
कर्मः ॥ प्रसृतं मर्म  
नय वस्तु उद्यमि ॥ ०० ॥  
भवतु यै कर्म वन

वृयभीक्षुड॥ सविठुंवि  
ठुंयउल्लुनंविणिमादिक  
म॥३॥ पषडूनडयल्लुनं॥  
नमठवचुषगिणन॥ वेडि  
मवेषकुडयउल्लुनंविणिग  
ल्लुमं॥३०॥ यडवडुवमेक  
मिकदेमडुमदेडकन॥

श्री  
मगी

१०५



मउइउवरुन्देमउडुभम

भरुदउम॥३३॥नियउंम

मगदिउंमगगमुषउःवउं॥

मदलपुपुनकमयउडु

दिकममुउ॥३३॥यउकमे

पुनकममदकेवप

नः॥शियउवदलयाभंउ

329

मूलभूतज्ञान ॥ ३॥ स

नमस्कृत्य यदि भाग्यपेक्ष

मथेनपन॥ मेदमगहउक

मयड्डानमममृते॥३५॥म

अभिनिन्दवन्ती पट्टद्वयम्

मन्त्रिउत्तर॥ मिष्टुमिष्टुषाच

कः कडुभादिकममृते ॥ ३० ॥

7-5



गगीकमदलयमः॥३॥  
 दिंभउकेसुशि॥५॥मिक  
 विउःकडुगमः॥५॥गिकी  
 डिउः॥३॥मयडुः॥५॥  
 मुवः॥म०॥नैषडिकेलमः॥॥  
 विषमिमीवमडुसकडु  
 उममममडु॥३॥३॥वम

33

ॐ सं प ड सै व गु ॥ सु भि वि  
ॐ म ॥ प्रे म न न भ मे वे ॥  
५५ डू न ठ न डू य ॥ ३७ ॥ ५६  
डिं ग नि व डिं ग क द क द  
ठ य ठ ये ॥ उ नु गि कं ग य ष  
डि व डू : म य उ म डू की ॥  
३. य य ठ न ठ नं स कं

श्री  
गंगा

१-१



332

देसकदनेवर॥ मयका  
वडुएराडिवसिः मयका  
गणमी॥ ३०॥ मयका  
मनिडियमट्टेडमम  
कडा॥ मवाडाविपगीडंम॥  
वसिः मयकाडममी॥ ३१॥  
पट्टययणगयडमनःपू

३३३  
ॐ श्रियः ॥ यिगेन

वृत्तिगानि ॥ ८० ॥ पाडिभापा

उमादिकी ॥ ३३ ॥ ययउ

पद्मकभउ वृष्टणयउ

स्तन ॥ प्रभजेन ढलकंके

श्री  
रुगी

पाडिः भापाउगर्भी ॥ ३२ ॥

१०३

ययभयंभयंमेकं विषय



ममनेवरा॥ नविगुल्लुडिम्

मेव॥ पडिमाय॥ उडनमी॥ ३५

॥ भापेदिमनी॥ इविपं॥ म॥

मेव॥ उडन॥ सव॥ म॥ म॥

उय॥ इम॥ प॥ उं॥ रा॥ नि॥ ग॥ म॥ उ॥ ॥

३०॥ य॥ ड॥ म॥ रे॥ वि॥ य॥ भि॥ व॥ य॥

॥ ३०॥ मे॥ म॥ उ॥ य॥ मे॥ ॥ उ॥ ड॥ म॥

भग्निकंपेउमभुवासुः

प्रभारुम ॥ ३१ ॥ विषये

द्वियमंयोगमृडुगरेउ

यमं ॥ यमि ॥ मेविषमि

श्री  
रुगी

वड्डुपंगरुमंभुडा ॥ ३३

॥ यमरेमवरुमभापंमे

१०७

दनभड्डनः ॥ निमूलमृ



336

धर्ममेतत्तु नमः नमः

उम ॥ ३७ ॥ नतमः सुपुषिकुं

वसि विरुवेव वापुनः ॥ भद्वं

पुनडिरे मृत्तुं यमेतिः मु

डिठिनु ॥ ५० ॥ वृद्धं कडि

याविमं मुद्रं मपगुप

कमपु विठुनिमः

वधूवैजु ॥ २० ॥ मभेयभभु

यः मोरंकादिगलवनेवय ॥

हनेविह्नभाभुद्धेवभूक

अभुठवल्भ ॥ २१ ॥ मोदंडे

श्री  
रुगी

एपडिभकंयभूगपृपल

यनः ॥ रुवभीमुग्वसुकां

कभुठवल्भ ॥ २२ ॥ वधि



गिरिवर्गल्लंवेष्टकम्

भठवल्म॥ परिगदत्तु

॥ कंकम् सुम्भुपिभठव

ल्म॥ ॥ ॥ सेसेकम् टठि

गुः भंभिष्टिंलठउनः ॥ ॥ सु

कम् निगुः भिष्टिंयषावि

राडिडम् ॥ ॥ ॥ यडः ॥ ॥ ॥

३३९  
कडि कुडनं येन भवामिहं

उडं॥ भकभु उमहृ

मिहं विरुडि नमः॥२०॥

म्या मयमि विगुः॥५॥

ममभनधुडउ॥ भठव

नियडंकम जचनधेडि

किविषग॥२१॥ भदरं

श्री  
ठगी

३००



कमकेतेयभरिषमाधि  
नट्टेउ॥भवागभूदिने  
ये॥पुमेनगिरिवकडः॥३॥  
मभउवसिमवडः॥उड्ड  
विगडम्पदः॥नैकम्भिमिं  
पगभं॥भट्टमेनगिरिगम्पुडः॥  
२०॥मिमिंपुपुयषावृद्ध॥

उषाधेडिनिगेठने॥भग

भनेवकेडेयनिधुल्लनष्ट

यापर॥५॥बहुविमुद

ययडेएड्डननियम॥

मवृरीविषयभृङ्गाग

दुर्धृष्टमृग॥५०॥विकु

मेवीलधुमीयडवक्का

श्री  
ग्री



342

यमनमः॥ष्टनयोगपरि

ष्टंवेगंमंगयामिउः॥५३॥

सदङ्कंरुलंरुदंकरुंरुं

परिगुदम॥विमसुविम

मःमउरुदंरुयायकल॥

उ॥५३॥रुदंरुउः॥प्रमना

इनमिणडिनकंरुडि॥म

२३५३  
मः मवेषकुडयगमठिं

लठउपगं॥५२॥ ठकुभ

मठिनाडियवटस

मिउड्डः॥ उडेभउड्डे

लठविमडेउरननुं॥५५॥

भवकभटपिमरकुवा

ममृयामयः॥ मड्म

ॐ  
ग्री

३०३



३५५  
सखधेडिममुडेपर

मवयम॥५०॥सडमम

वकमममयिममम

मडरः॥वडियगमपम

डममिडुःमडडंठव॥५१॥

ममिडुःमवमममम

मममममममम॥ममम

३५५

इमदङ्कग्नमेधुमिविन्ध

मि॥५३॥ यरदङ्कग्नमिह

नयिदुङ्गडिग्नमे॥ मिष्टेव

वृवभायमुपूतडिमुनिय

हृडि॥५७॥ भूठक्लेनकैतु

यनिवसुःसेनकम्

कडुनेसुमियदिकारि

श्री  
ठगी

३०२



३५६  
शुभवर्मिधिउउ॥०॥१॥

२:भवकुउनं॥६॥मेमेहन

डिधूडि॥६॥भयमवकुउ

नियडुडुमनिभायया॥०॥

उगेवम॥०॥गमुभवठ

वनठगड॥०॥भडुभागड॥०॥

मडिउंउनं॥०॥भमममुउं॥०॥३॥

347

ॐ डिउल्लुमभापुउंगुल

मुल्लुउंगुमय॥ विमल्लुउ

रमेवे॥ यवेमुमिडवा

उन॥ ०३॥ भवमुल्लुउंगु

यः॥ मु॥ भेपमंवरः॥

ॐ धूमिभेमुल्लुगडिउडे

वदु॥ भिउदिउम॥ ०२॥ न

श्री  
रुगी

३५



मन्त्रवमन्त्रुतेमन्त्रु  
 मन्त्रमन्त्रुतेमन्त्रु  
 मन्त्रमन्त्रुतेमन्त्रु  
 मन्त्रमन्त्रुतेमन्त्रु  
 मन्त्रमन्त्रुतेमन्त्रु  
 मन्त्रमन्त्रुतेमन्त्रु  
 मन्त्रमन्त्रुतेमन्त्रु

३५९

उरुंतेन उपभुङ्क्ते न कञ्चि

यकमरुतन ॥ नरा मुमुक्षु

वेवागुं नरा भयै हृष्य

३॥०१॥ यः उरुं पगं गुहं ॥

भस्मैः प्रविष्टा भृति ॥ ४३॥

भयपगं वदन् न भवेष्ट

भिमं मयः ॥ ७३॥ नरा उभ

श्री  
ग्री

३००



350

भगवत्पुत्रकश्चिन्माथ्य  
वडनः॥ छविउकगने  
उमरुष्टः॥ प्रयडिगुवि॥  
७७॥ मृष्टुष्टुडमयडमं०  
मुंमंवरुगवयेः॥ लुक्व  
लेनडनादभिष्टुःभृमि  
डिगेभाडिः॥१॥ मृष्टुवा







मस्तुतः॥

३५८  
वधुभिदः भुडिजवुभु

कुभाभाभयामुड॥ भुडि

भिरगडभनेदः कगिष्टव

गनेडव॥ १३॥ मस्तुयवश॥

उडुदं वभुयिवभुपाडुभु

गभदडुतः॥ संवराभिम

भमिष्टभभुडुंगेभदव॥

१५

वृमप्रमायड्डवनेउम्

ठमदंपरम॥ ययंयेगे

मृगड्डड्डड्डड्डड्डड्डड्ड

मृयम॥ मृयम॥ मृयम॥

मृयम॥ मृयम॥ मृयम॥

केमव॥ मृयम॥ मृयम॥

मृयम॥ मृयम॥ मृयम॥

श्री  
मृगी

3-3



उच्चमंभुउमंभुउयम  
 उमुउंदगे॥ उभयैगेमद  
 ग॥ रुष्टाभियमः॥  
 नः॥ ११॥ यइयैगेमः॥ द॥  
 यइयैगेमः॥ उइमी  
 वि॥ य॥ उ॥ इ॥ व॥ नी॥ उ॥  
 डि॥ म॥ १३॥ उ॥ इ॥ म॥ द॥

अ॒द॒ठ॒ग॒उ॒म॒उ॒म॒द॒भू॒भा॒द॒

उं॒यं॒वै॒यू॒मि॒ठं॒म॒ग॒रु॒प॒

च॒नि॒ठ॒ग॒व॒झी॒ड॒मु॒प॒नि॒

प॒ड॒बू॒ड॒वि॒ष्ट॒यं॒ये॒ग॒म॒

मु॒री॒व॒भू॒स॒र॒भं॒व॒र॒मे॒

क॒म॒भू॒म॒ये॒गे॒न॒भा॒धू॒र॒

मि॒ष्ट॒यः॑॥०३॥ सु॒ठ॒ सु॒ठ॒

श्री  
ठागा

३-७



356

35-

अष्टमसप्तमशतकम्

सप्तमः



358

